CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Module PH-7

|| the gurukul ||

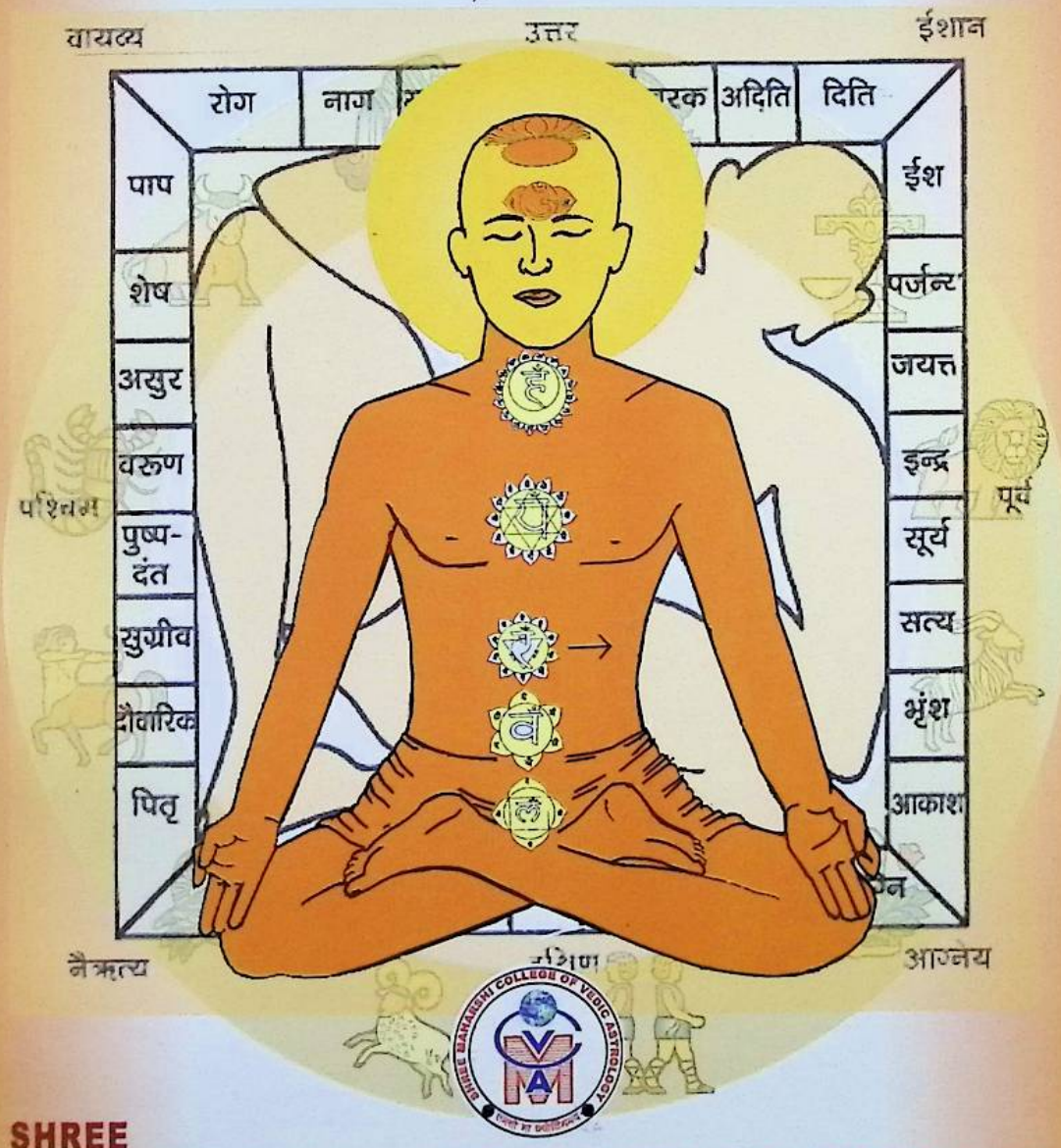

SHREE

MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY

The Harmony of Space & Elegance

A Unit of KNS Society

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vedic Palmistry
Module - 7

अनुक्रमणिका

अध्याय 1	:	रेखाओं का स्वरूप एवं उनका परिवर्तित रूप	3–13
अध्याय 2	:	जीवन रेखा	14–47
अध्याय 3	:	जीवन रेखा का अन्य रेखाओं से संबंध	48–55
अध्याय 4	:	जीवन रेखा के दोष	56–93

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. रेखाओं का स्वरूप एवं उनका परिवर्तित रूप

मानव के हाथ में हथेली के संचालन, उसके खुलने, पकड़ने व बंद करने से जातकी की शरीर की रचना अनुसार अलग–अलग रेखाएं अपनी मूल रेखाओं के साथ विशेष आकार ले लेती है। अतः इनकी रचनाओं में परिवर्तित आ जाता है व कई आकार लेकर भ्रमित करती है अतः इनकी भी योजना बद्ध जानकारी होना आवश्यक हो जाता है।

शुभ एवं गुणकारी रेखाएं सदैव सीधी, उर्ध्व लंबी तथा समान गहराई व मोटाई वाली होती हैं।

इसी प्रकार इनके आकार व एक दूसरे को काटने से कुछ विशेष चिन्ह व अशुभ रेखाएं भी बनती है। ये निम्न है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

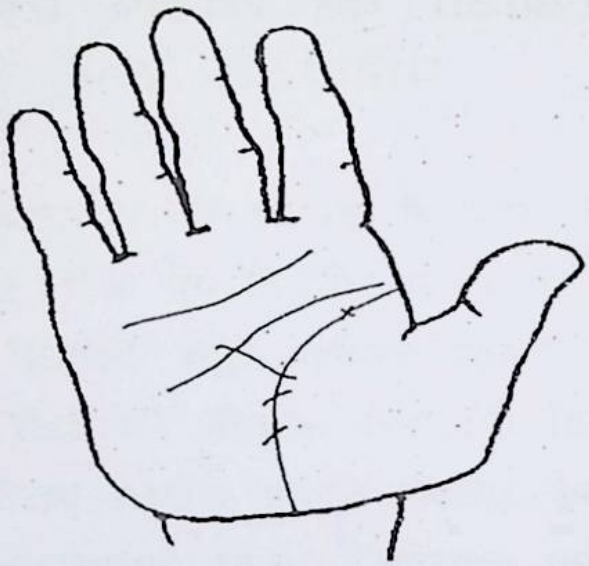

1. गुणा चिन्ह (Cross)

दो रेखाओं के आपस में काटने से उत्पन्न गणित के गुणा का आकार ले लेता है यह किसी रेखा पर होने पर उसके प्रभाव को खत्म करता है तथा विशेष अवस्था में दुर्घटना का सूचक है। यह क्षेत्र विशेष पर स्वतंत्र से शुभ व अशुभ फल प्रदान करता है। जैसे :–

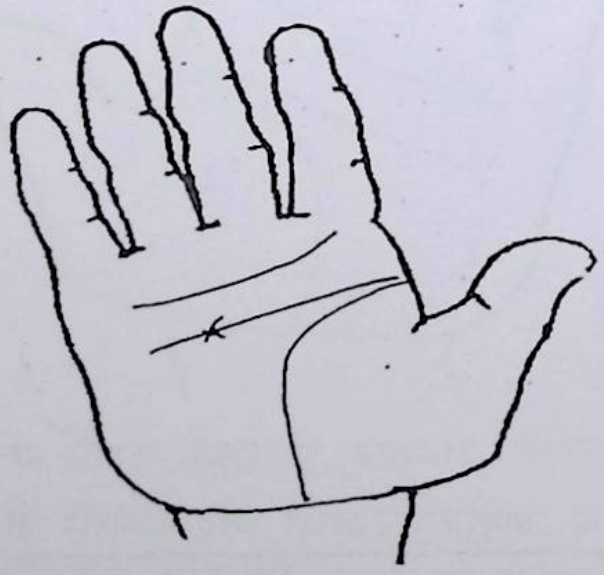

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुरू पर्वत व मंगल के मैदान शुभ फलकारी है।

2. रेखाओं का टूटना

रेखा का बीच में टूटना या चलती हुई रेखा का बीच में टूटना अचानक हानि या दुर्घटना का संकेत है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. टूटी रेखा का पिछला सिरा मुड़ा होना

टूटी हुई रेखा जिसका एक छोर वापस पिछे से मुड़ा हुआ हो तो संभावित दुर्घटना की क्षतिपूर्ति होना है।

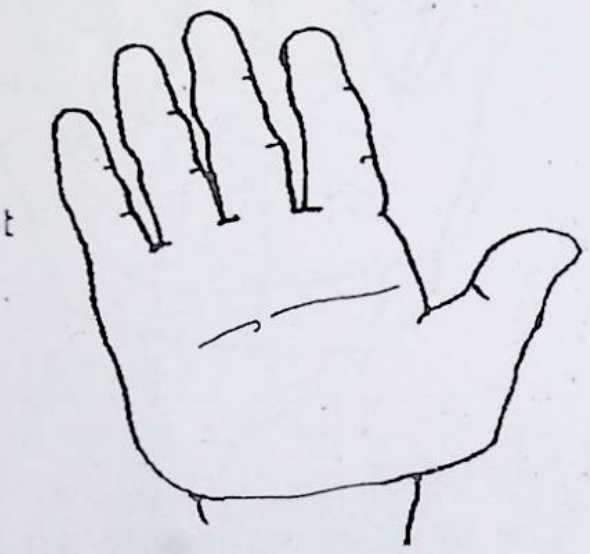

4. तारे का चिन्ह

एक से अधिक रेखाएं एक दूसरे का क्रास कर तारे का चिन्ह या नक्षत्र की आकृति बनाती है।

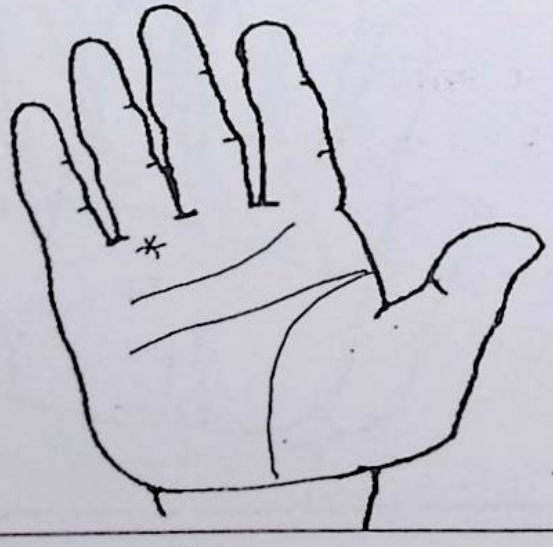

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह चिन्ह केवल सूर्य क्षेत्र पर ही शुभ है। अन्यथा अशुभ परिणाम भी प्रदान करता है।

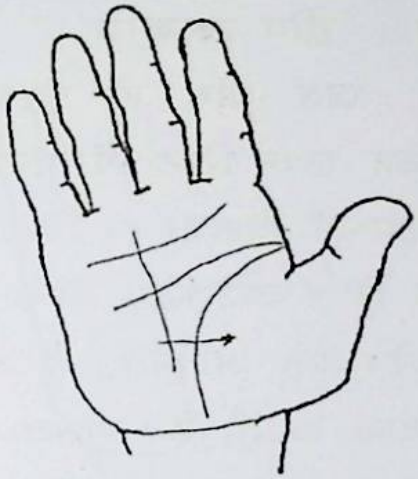

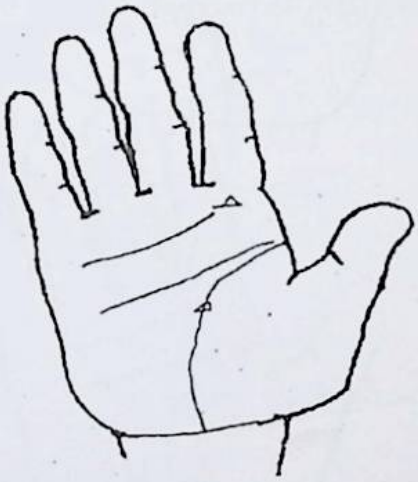

5. त्रिकोण आकृति

ज्यामिति के त्रिकोण बनाती रेखाएं शुभ चिन्ह मानी जाती है। ये रेखाओं पर स्वतंत्र रूप में शुभ फलदायक है।

6. चतुर्भूज आकृति

ज्यामिति के चतुर्भूज आकार में परिवर्तित रेखाएं भी शुभ फल प्रदान करने वाली है। रेखाओं पर इसे सम्यक भाव प्रदान करने वाली तथा जीवन रक्षक आकृति माना गया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. द्वीप आकृति

जब बीच में चलती हुई रेखा एक सिरे से फटकर दो रेखा में विभक्त हो फिर आपस में मिल कर द्विप चिन्ह उत्पन्न करे। यह आकृति भी अशुभता प्रदान करती है। मुख्य रेखाओं पर इसकी उपस्थिति प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाने वाली या जेल ले जाने वाली होती है।

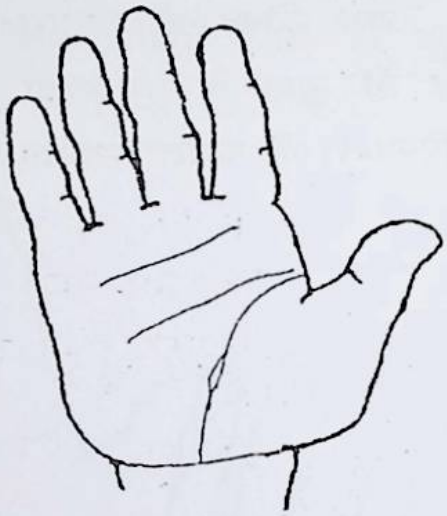

8. दो शाखा में विभक्त रेखा

यदि कोई रेखा सिरे पर या उत्पत्ति स्थल पर दो भाग में विभक्त हो जावे, तो वह उस रेखा विशेष के गुणों में वृद्धि प्रदान करती हैं या विभक्त हो किसी विशेष स्थल के गुणों को समाहित कर दोनों गुणों को प्रदान करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

9. पुच्छां आकार

जब कोई रेखा अपने छोर पर कई शाखाओं में विभक्त हो एक गुच्छे की आकृति बनाले तो यह चिन्ह भी गुणों को कमजोर करता है। यह शारीरिक अक्षमता व स्नायू मंड़ल की कमजोरी को बताता है।

10. बिंदु आकार

रेखाओं के मध्य बिंदु का आधार शारीरिक कमजोरी तथा आकस्मिक दुर्घटना बताती है। यह अशुभ चिन्ह माना गया है।

11. लहरीली रेखा

रेखाओं में लहरीलापन या बार-बार दिशा बदलते जाना रेखा के मूल गुणों को कमजोर करता है। यह कमजोर रेखा का परिचायक है।

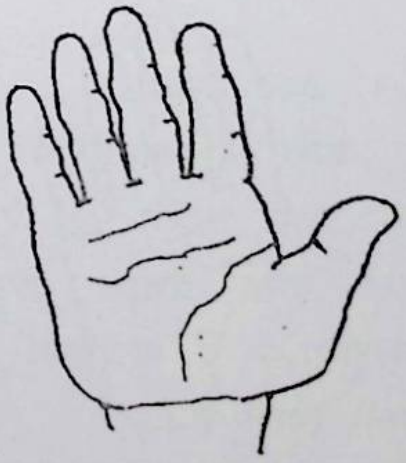

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

12. मत्स्याकार रेखा

रेखा चलते हुये मछली का आकार निर्मित करें या एक से अधिक मछलीनुमा आकृतियां बनाती है ऐसी आकृति शुभ फल प्रदान करती है।

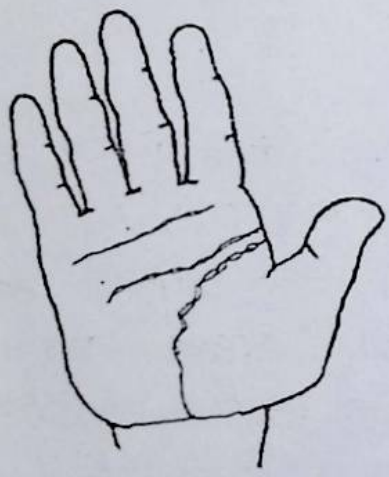

13. श्रृखंलाकार रेखा

किसी भी रेखा का श्रृखंलाकार होना या जंजीर की कड़ीयों की आकृतिनुमा होना उस रेखा के विशेष गुणों को निर्बलता प्रदान करता है।

14. उर्ध्व रेखाएं

हाथ में रखाओं के समानान्तर एवं ऊपर उठती हुई रेखाएं अच्छे शुभ फल प्रदान करने वाली, भाग्यवृद्धि व पराक्रम को बढ़ाने वाली होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

15. रेखाओं की जाली

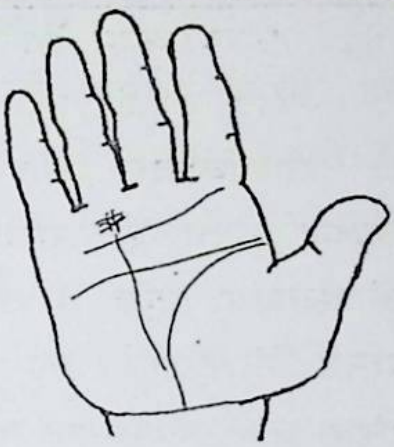

जब समूह रूप में एक दूसरे को काटती हुई रेखाएं क्षेत्र विशेष पर एक जाले के रूप में व्यवस्थित हो जाती है। इनको अशुभ चिन्ह माना जाता हैं क्योंकि इसके द्वारा अस्थिरता, कुण्ठा तथा चरित्रबल में कमजोरी उत्पन्न होती है।

16. हथेली में नीचे गिरती हुई रेखाएं :– मुख्य रेखाओं व सहायक रेखाओं से सलंग्न नीचे की ओर बढ़ती हुई रेखाएं कामुकता तथा धन की चंचलता को बढ़ाती है तथा गलत कर्मो की तरफ जातक को प्रवृत्त करती है।

17. बलरूपी रेखाएं

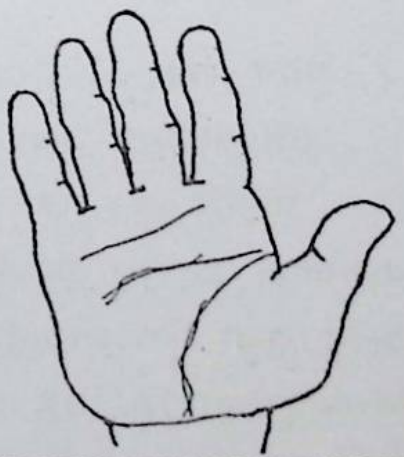

मुख्य रेखाओं या सहायक रेखाओं से लिपट कर जैसे वनस्पति जगत में बेल किसी सहारे को लेकर ऊपर चढ़ती है ठिक उसी प्रकार लिपटी रहती है। ये मूल रेखा के गुणों को कम करती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. रेखाओं का रंग

सामान्यतया अलग वर्णो के जातकों में हथेली का रंग अलग होता है साथ ही हथेली व रेखाओं का रंग भी असामान्य होता है अर्थात् रेखाएं अपना अलग रंग लिये रहती है। रेखाओं का एक समान रूप में गहरा होना, सभी तरफ एक मोटाई या पतला होना, स्वास्थ्य, स्फुर्ति, तेजस्वीता एवं आत्म बल को बढ़ाने वाला होता है।

1. लाल रंग की रेखाएं

लाल रंग लिये हुई रेखाओं वाला जातक अच्छे स्वास्थ्य का स्वामी एंव सक्रियता रखने वाला साहसी होता है। परन्तु रक्त संचार की अधिकता से शीघ्र आवेशित होने वाला व क्रोधी भी हो सकता है। ऐसे जातक में आत्मशक्ति बहुत अधिक पाई जाती है।

2. पीले रंग की रेखाएं

रक्त अल्पता तथा जातक के यकृत के कमजोर होने पर पित्त प्रकृति बढ़ जाने से रेखाएं पीली हो जाती है यह कमजोरी उत्पन्न करती है। जातक एकांतप्रिय, कम बोलने वाला तथा निराशावादी होता है तथा थोड़ी भी समस्या से विचलित हो चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. काले अथवा बैंगनी रंग की रेखाएं

काले या बैंगनी रंग के हाथ वाले जातक क्रोधी, हठी एवं कठोर होते है तथा ईर्ष्या व बदले की भावना रखते है। स्वभाव में गंभीर तथा अकड़पन होता है। ऐसे रंग वाली रेखाओं को अशुभ ही माना जाता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन रेखा

मनुष्य के जीवन में तीन आधारभूत मूल गुण होते है। पहला उसका भौतिक शरीर जिसके द्वारा बाह्य जगत में विद्यमान होता है। दूसरा इसका विचार पक्ष, जो उसे अन्य प्राणियों से अलग स्थान दिलाता है। मस्तिष्क या उसकी बृद्धि जिसके द्वारा इस संसार की संरचना या विशिष्टताएं उत्पन्न होती है। तीसरा पक्ष उसके द्वारा उत्पन्न होने वाली भावनाएं एवं संवेदनाएं जो दूसरों से प्रकट करता है। इन तीनों मूल विशिष्टताओं को प्रकट करने के लिये मानव के हाथों में तीन मुख्य रेखाओं की उत्पत्ति है। जो क्रमशः आयु रेखा या जीवन रेखा, बुद्धि के लिये मस्तिष्क रेखा तथा भावनाओं को प्रकट करने वाली हृदय रेखा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हथेली के मध्य में गुरू पर्वत के नीचे से शुक्र पर्वत क्षेत्र को घेरती हुई अर्धचन्द्राकार गोलाई में मणिबंध तक पहुंचाने वाली रेखा जीवन रेखा या आयु रेखा के रूप में पहचानी जाती है। ग्रंथों में इसे पितृ–रेखा, गौत्र रेखा, इत्यादि भी बताया गया है। इस रेखा से स्वास्थ्य तथा प्राण शक्ति की जानकारी प्राप्त होती है। इस रेखा से जातक के जीवन के बारे में महत्वपूर्ण पहलू के बारे में भी पता चलता है जैसे जातक कब किस आयु में असफलता प्राप्त करेगा। यह रेखा स्पष्ट सुंदर व अच्छी गोलाई वाली हो तो ऐसा जातक उत्तम स्वास्थ्य वाला, लंबी उम्र प्राप्त कर वैभव व सुखी जीवन व्यतीत करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके विपरित यह रेखा खंड़ित हो तो संघर्ष कर कठिनाई पूर्वक जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। ऐसा जातक जीवन भर दुखी रहेगा। दुर्बल रेखा का होना उसकी प्राण शक्ति का अभाव बताती है और उसके स्वास्थ में कमी की ओर इंगित करती है।

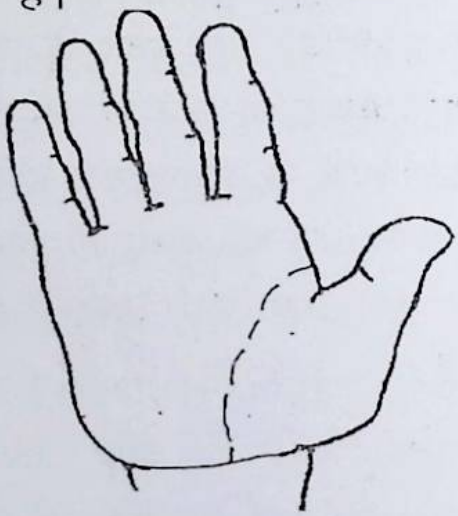

इस रेखा के साथ प्रभावी व सहायक रेखाओं का होना उसके गुणों को बढ़ाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

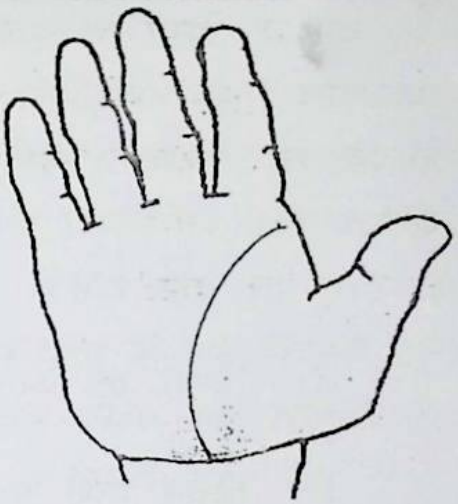

सामान्यतया करतल के पास से इस रेखा का प्रारंभ होता है यह इसकी स्वाभाविक स्थिति है परन्तु गुरू पर्वत से प्रारंभ हो तो जातक यश व सम्मान पूर्वक, धन संचय कर जीवन व्यतीत करता है। इस रेखा का अन्य पर्वत क्षेत्रों उनकी स्थिति, विकसित या अविकसित अवस्था में प्रभाव, कम या ज्यादा फलदायक है। जीवन रेखा में आयु का निर्धारण भी संभव है परन्तु स्पष्ट अंतिम निर्णय इससे नहीं प्राप्त किया जा सकता। क्योंकि जीवन रेखा मुख्य रूप से प्राणशक्ति को प्रकट करती है।

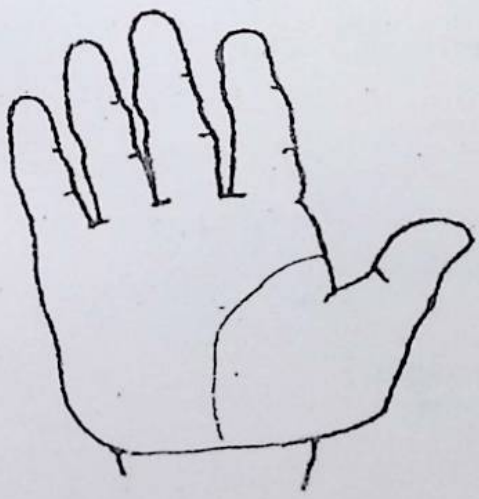

प्रायः देखा गया है कि प्रारंभ में इस रेखा की स्थिति सुदृढ़ सुंदर होती है। परन्तु बाद में क्षीण हो जाती है इसका तात्पर्य की प्रारंभ में जातक की प्राणशक्ति संचित थी परन्तु बाद मे जीवन के उत्तरार्द्ध में प्राणशक्ति में कमी हो जाने से स्वास्थ्य कमजोर हो जायेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन रेखा के फलित को समझने के लिये इसका अध्ययन एक व्यवस्थित प्रणाली में तथा क्रमबद्ध दिया गया है जिससे इसका व्यापक रूप में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

1. रेखा का आरंभ
2. रेखा तथा पर्वत क्षेत्रों से संबंध
3. जीवन रेखा का स्वरूप
4. जीवन रेखा का समापन स्थल
5. जीवन रेखा का अन्य रेखाओं से संबंध
6. जीवन रेखा से निकलती हुई रेखाएं
7. जीवन रेखा के दोष
8. जीवन रेखा से संबंधित चिन्ह
9. जीवन रेखा व प्रभाव रेखाएं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन रेखा का प्रारंभ

तर्जनी और अंगूठे के बीच के क्षेत्र से आरंभ होकर शुक्र क्षेत्र का घेरा बनाती हुई मणिबंध तक जाती है। जीवन रेखा सामान्यतः गुरू क्षेत्र से प्रारंभ हो मंगल क्षेत्र के मध्य से होते हुये शुक्र का घेरा बनाती है। वास्तव में यह स्थिति शुभ एवं संतुलित शारिरीक व मानसिक शक्ति को बढ़ाती है। जीवन रेखा का प्रारंभ दो स्थानों से माना गया है।

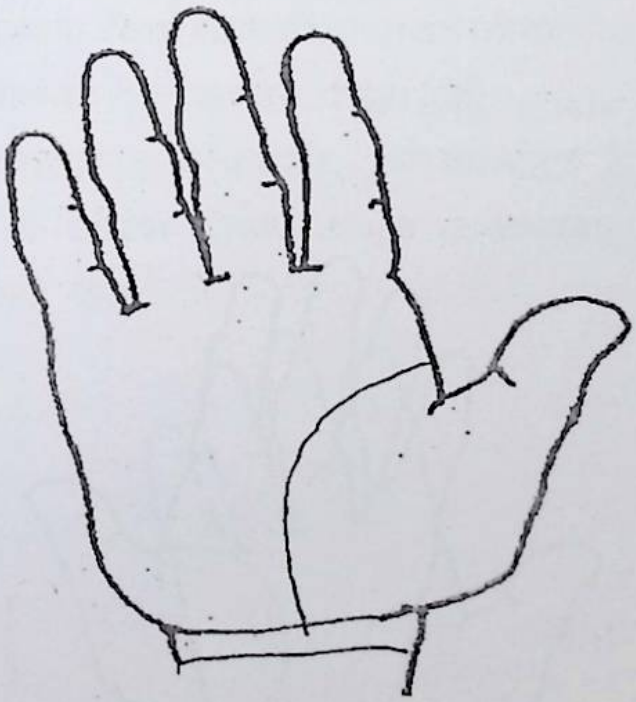

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ. गुरू पर्वत क्षेत्र से

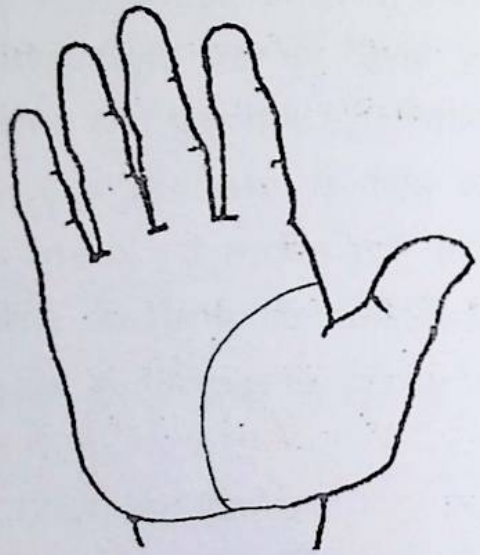

ब. निम्न मंगल क्षेत्र से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ. गुरू पर्वत क्षेत्र से

यदि रेखा तर्जनी के नीचे से या इस क्षेत्र के मध्य से प्रारंभ हो तो जातक अच्छा आकांक्षा वाला तथा धून का पक्का हो अपने लक्ष्य को पूर्ण करता है।

ब. निम्न मंगल क्षेत्र से

जब जीवन रेखा, गुरू पर्वत व अंगूठे के मध्य स्थित मंगल क्षेत्र से आरंभ होती देखी जाती है तो यह स्थिति अशुभ मानी जाती है क्योंकि इस स्थिति में प्रारंभ होने पर जातक भाग्यहिन, संघर्षपूर्ण स्थिति में जीवन व्यापन करता है। उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं होता तथा जीवनभर परेशानियों का सामना जातक को करना पड़ता है।

भारतीय विद्वान कार्तिकायन, की मान्यता है कि जीवन रेखा मणिबंध से आरंभ होकर अंगूठे व मध्यमा के बीच के स्थान तक जाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन रेखा जिस अर्ध चंद्राकार वृत्त को बनाती है यह

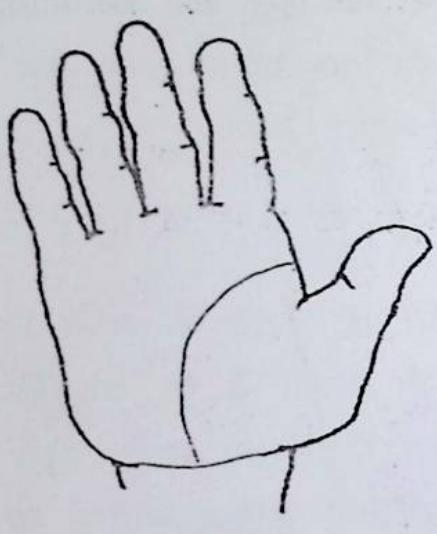

आकार व क्षेत्रफल में जितना बड़ा होगा जातक में उतनी ही सक्रियता उत्पन्न होगी। यह सक्रियता या शक्ति, साहस व कर्म को बनाती है जिससे जातक लंबी आयु प्राप्त करता है तथा जीवन में कर्म क्षेत्र में काफी सफलता प्राप्त करता हैं। किन्तु यदि यह वृत्त बहुत बड़ा होने पर चंद्र क्षेत्र तक पहुंच जाये तो जातक को अतिकामूक भावुक या व्याग्रता के साथ असंयमित बनाता है। जिससे जातक अपना जीवन नष्ट कर लेता है।

इसके विपरित इस वृत्त के संकरे या छोटे होने से क्रियाशीलता में कमी से स्वास्थ्य की कमजोरी, उत्साह की कमी तथा शारीरिक शक्ति में आशकता बताता है। स्वास्थ्य खराब होने से जीवन में उन्नति नहीं होती हैं।

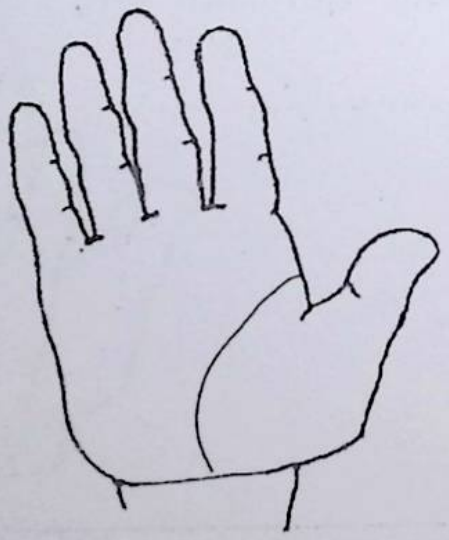

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस रेखा से निकलती हुई कुछ शाखाएं ऊपर की ओर जाती है। यह जातक के महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व की परिचायक है।

ऐसे जातक अपने उत्तरदायित्व को पहचानते है और उन्हें पूर्ण करने में पूरी सामर्थ्य लगा देते है यदि कोई शाखा गुरू पर्वत तक पहुंच रही है तो इन गुणों का इजाफा हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि रेखा अपनी सामान्य स्थिति से उच्च हो अर्थात् जिस स्थान पर प्रारंभ होती है उससे थोड़ी ऊपर हो तो शुभ स्थिति है। ऐसा जातक अपनी सुझ–बूझ से कार्य करने वाला होता है।

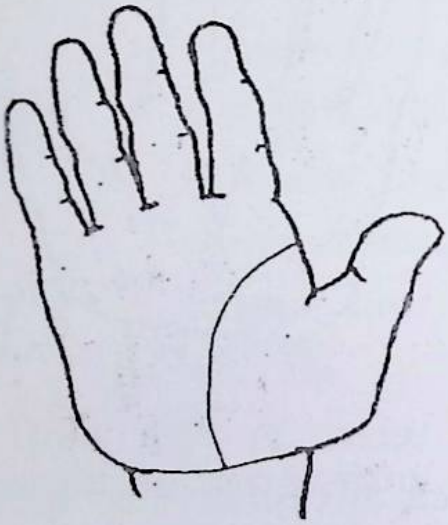

हाथ की कठोरता जातक के साहस व शौर्य को बढ़ाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. जीवन रेखा का पर्वत क्षेत्रों से संबंध

हस्त रेखा शास्त्र में रेखाओं का महत्व पर्वत क्षेत्रों के विकसित व अविकसित स्थिति में बदल जाता है अतः अलग–अलग स्थिति अलग–अलग फल प्रदान करती है।

1. गुरू क्षेत्र तक पहुंचने वाली जीवन रेखा

यदि जीवन रेखा का प्रारंभ तर्जनी के उद्‌गम स्थल से या कोई शाखा इस स्थल तक पहुंचती है तो जातक अत्यधिक महत्वाकांक्षी, अपने अधिकारों का सद्‌पयोग कर नौकरी या व्यवसाय में उन्नति करने वाला तथा अपने कर्मो के प्रति निष्ठावान होता है। परन्तु स्वास्थ्य की दृष्टि से श्वास संबंधी रोगों से संक्रमित रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. शनि क्षेत्र तक पहुंचने वाली जीवन रेखा

यदि जीवन रेखा से निकलने वाली कोई शाखा भाग्य रेखा के साथ मिलकर या स्वतंत्र रूप से शनि पर्वत क्षेत्र में प्रवेश करे तब जातक को अर्थ लाभ तथा भौतिक सुख प्राप्त होता है। परन्तु यह सब उसे स्वयं से संघर्ष व परिश्रम द्वारा ही प्राप्त होता है। ऐसे जातक मुख संबंधी रोगों से भी ग्रस्त रहते है।

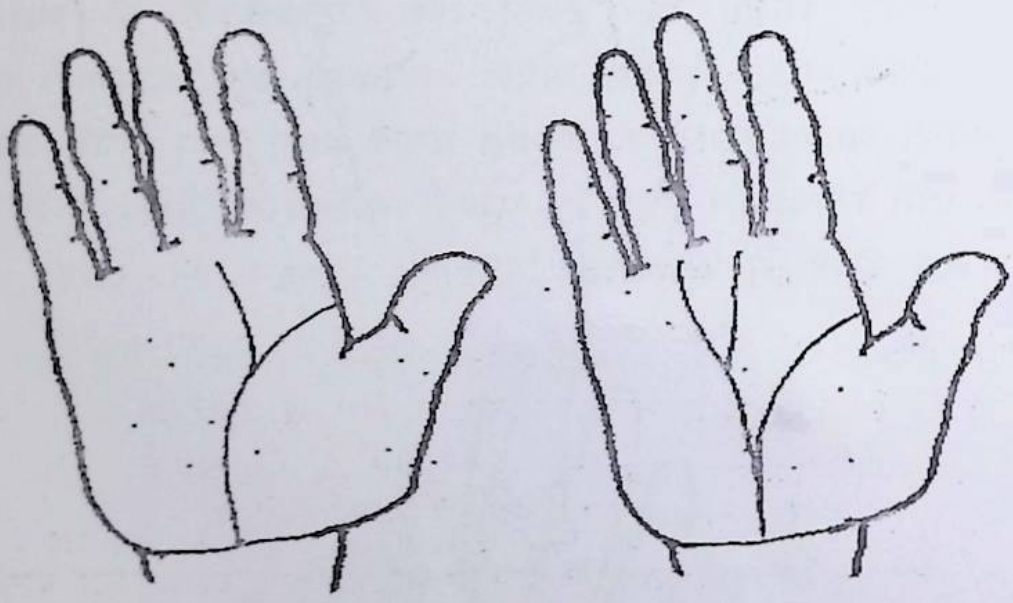

3. सूर्य क्षेत्र तक पहुंचने वाली जीवन रेखा

जीवन रेखा या जीवन रेखा की कोई शाखा सूर्य पर्वत क्षेत्र तक पहुंचती है तब जातक पराक्रम व उत्साह से भरपूर अपनी विशिष्ट जीवन शैली लिये प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करता है। समाज में उच्च स्थान पर पहुंच कर नेतृत्व करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा कभी–कभी घंमड़ी भी हो जाता है क्योंकि सभी भौतिक सुखों का स्वामी होता है तथा जीवन में असफलता का मुंह कभी नहीं देखता है। अतः स्वाभिमान बड़कर अभिमान में परिवर्तित हो जाता है।

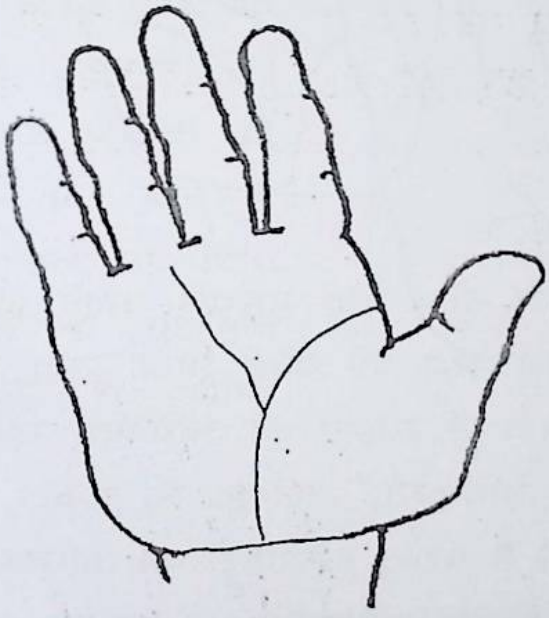

6. बुध क्षेत्र तक पहुंचने वाली जीवन रेखा

यदि जीवन रेखा की कोई शाखा बुध क्षेत्र तक जावें, तब जातक व्यवसाई होने पर व्यापार में सुझबूझ से तरक्की कर धन लाभ प्राप्त करता है। उसमें बुद्धि तात्पर्य अधिक रहेगा। अन्वेषण शक्ति होने से वैज्ञानिक या कुशल अनुसंधान करने वाला या चिकित्सा क्षेत्र में तरक्की करता है। शल्य चिकित्सा मे अत्यधिक कुशलता प्राप्त करता है। ऐसे जातक का पाचन तंत्र खराब एवं पित्त रोगों से ग्रसित रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

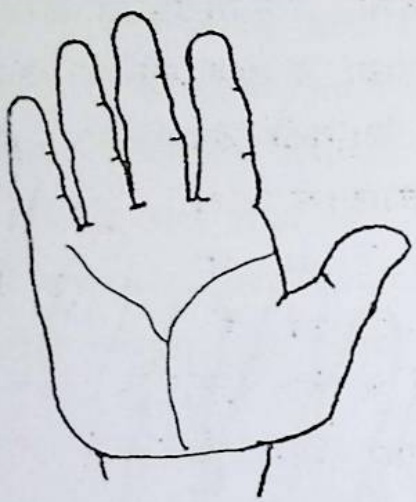

5. उच्च मंगल क्षेत्र तक पहुंचने वाली जीवन रेखा

यदि जीवन रेखा की कोई शाखा उच्च मंगल क्षेत्र तक पहुंचे तब जातक में साहस की अधिकता रहेगी। ऐसे जातक अच्छे सैनिक, अधिकारी, खेलकूद में अव्वल तथा अनुशासन को पसंद करते है परन्तु दुस्साहस की अधिकता से इन्हें चोट, दुर्घटनाओं या विषम आपदाओं का सामना करना पड़ता है।

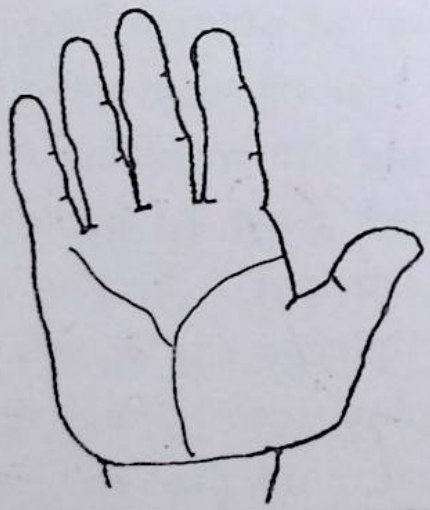

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. मंगल के मैदान में पहुंचने वाली जीवन रेखा

यदि जीवन रेखा से निकलने वाली शाखा मंगल के मध्य मैदान तक पहुंचती है। तब जातक को अनायास लाभ व कम कर्म करने पर भी आर्थिक लाभ पहुंचता है। साधारण सा कर्म जातक को बड़ी–बड़ी सफलताएं देता है तथा शारीरिक बल अत्यधिक रहता है ऐसे जातक साहसिक कार्य व खेलकूद में अग्रणी रहते हैं।

7. चंद्र पर्वत क्षेत्र तक पहुंचने वाली जीवन रेखा

चंद्र क्षेत्र अपने आप में कल्पना व कला पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है। यदि जीवन रेखा या इसकी शाखा चंद्र क्षेत्र में जाये तब उसके अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग फल है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैसे चंद्र क्षेत्र के मध्य क्षेत्र तक पहुंचने पर जातक बड़ी–बड़ी मात्राओं में सुखद अनुभव करता है।

अगर जीवन रेखा चंद्र क्षेत्र से ऊपरी भाग से मिलती है तथा जातक अस्थिर दिमाग तथा अत्यधिक उन्माद के कारण रोगी होता है। यदि हाथ की बनावट भी पिलपिली है, तब यह दुर्भाग्य का सूचक है परन्तु कला के प्रति इनकी विशेष रुचि होती है। इन्हें साहित्य, संगीत या नई सरंचना करने से सफलता प्राप्त होती है।

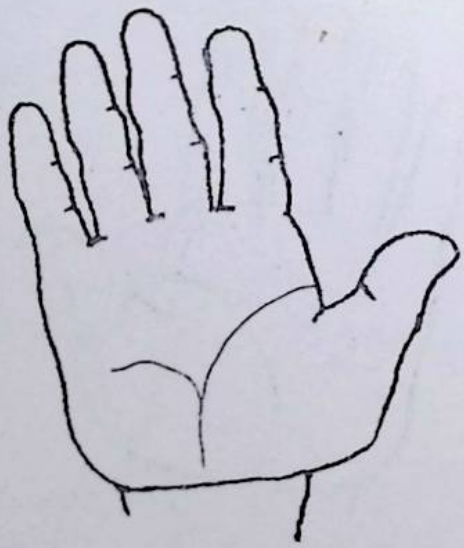

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४. मणिबंध तक पहुंचने वाली जीवन रेखा

यदि जीवन रेखा से कोई शाखा स्वतंत्र रेखा मणिबंध तक पहुंचे या चाप बनाये तो जातक के मस्तिष्क में विकार व सिरदर्द बना रहेगा।

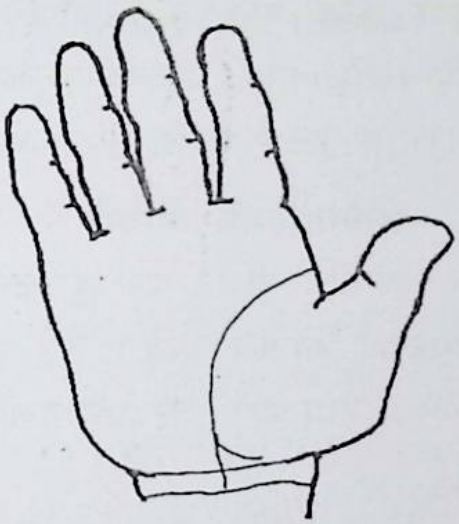

परन्तु दूसरी रेखाएं जैसे हृदय रेखा व मस्तिष्क रेखा के अच्छे रहने पर इसकी तीव्रता कम या नगण्य भी हो सकती है। जीवन रेखा के अन्य पर्वत क्षेत्रों पर पहुंचने पर होने वाले फलित व उनके परिवर्तनों के आधार पर विश्लेषण दिया गया है। अब जीवन रेखा के स्वरूप आकृति से उपरोक्त पर्वतों के गुणों व फल कथन में भिन्नता प्रदान करेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन रेखा की बनावट या स्वरूप

रेखाओं के स्वरूप व बनावट के आधार पर उसके गुणों में भिन्नता आ सकती है। इसका क्रमबद्ध विश्लेषण निम्न है।

1. श्रृंखलाकार जीवन रेखा

जंजीर युक्त या श्रृंखलाकार रेखा होने पर जातक का स्वास्थ्य खराब रहता है। पूर्ण जंजीर युक्त होने पर जीवन पर्यन्त स्वास्थ्य की परेशानी रहती है।

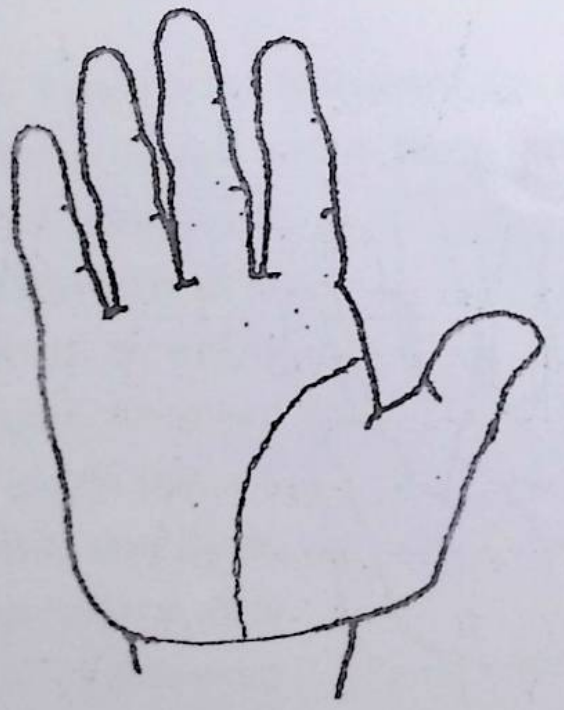

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु कुछ–कुछ जगह पर श्रृंखला होने पर स्वास्थ्य कभी–कभी खराब होता है। अच्छी रेखा वाली जगह स्वास्थ्य अच्छा रहेगा व कड़ीया होने वाली जगह खराब रहेगा। पील–पीले हाथों में ऐसी रेखा बहुत ही कष्ट प्रदान करती है।

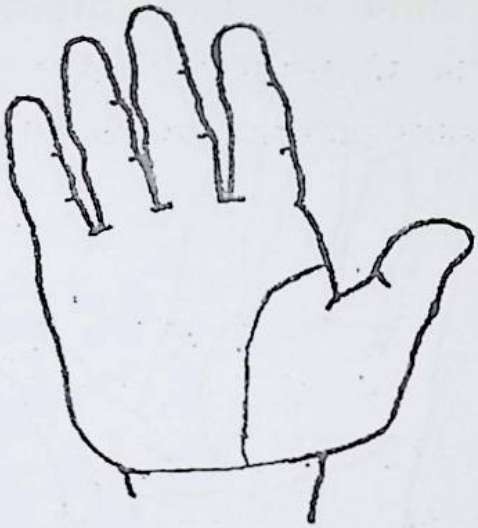

2. सीढ़ीदार जीवन रेखा

जीवन रेखा छोटी–छोटी रेखाओं के साथ सीढ़ीनुमा समायोजित हो तब शारीरिक निर्बलता तथा श्वास संबंधी रोगों की ओर इंगित करती है। स्वास्थ्य सदैव नरम गरम बना रहेगा जिससे ऐसा जातक सदैव चिडचिड़ा व रोगों से ग्रसित रहता है।

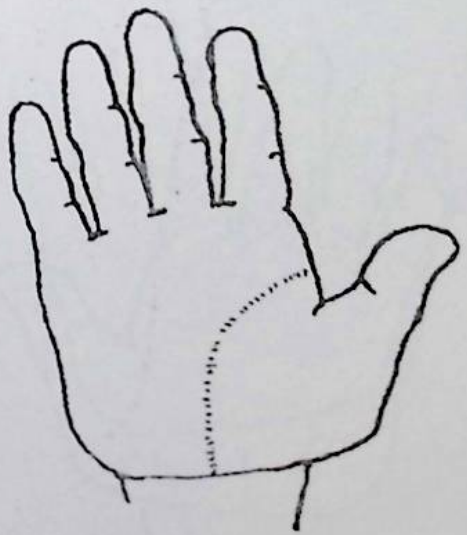

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. लहरदार जीवन रेखा

लहरदार जीवन रेखा भी जातक के खराब स्वास्थ्य के बारे में इंगित करती है। जातक सदैव रोगों से घिरकर कष्टप्रद जीवन व्यापन करता है।

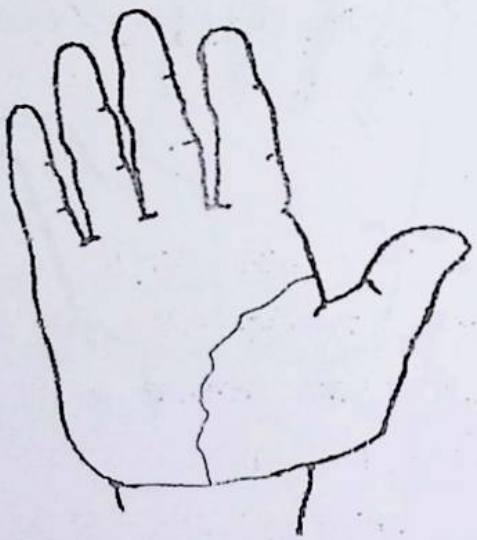

4. खंड़ित जीवन रेखा

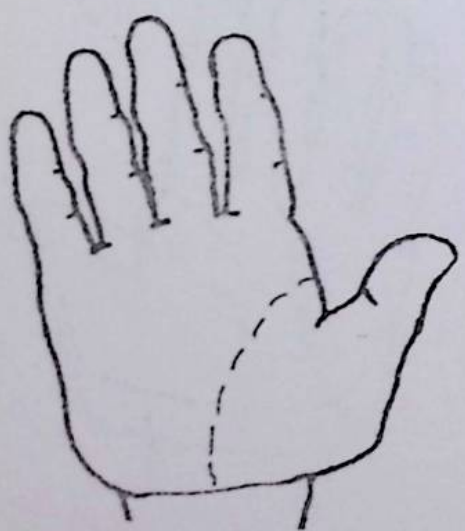

जीवन रेखा छोटी–छोटी उर्ध्व खंड़ित रेखाओं से बनी हो तो जातक फेफड़ों संबंधी रोग व कमजोर स्नायु मंड़ल वाला होने से कमजोर व रोग ग्रस्त रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. अर्धचंद्राकार पूर्ण गहराई लिये जीवन रेखा

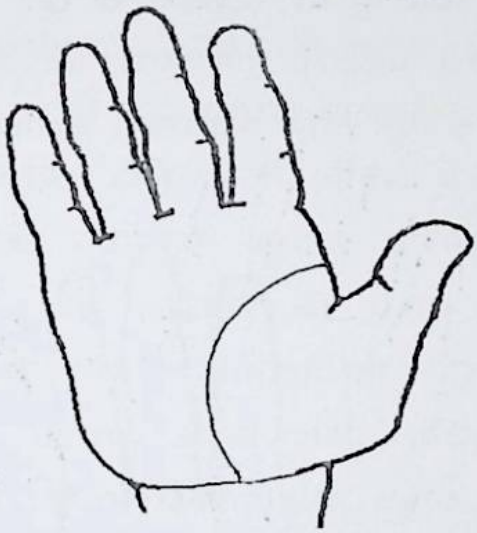

गुरू क्षेत्र के नीचे से शुक्र क्षेत्र को घेर पूर्ण अर्धचंद्राकार जीवन रेखा अच्छे स्वास्थ्य तथा प्राण शक्ति की अधिकता बताती है। शरीर में रक्त प्रवाह अच्छा होता है। अतः कर्म क्षेत्र में सक्रियता हर कार्य को पूर्णता प्रदान करती है।

6. अत्यंत पतली व संकीर्ण जीवन रेखा

पतली रेखा लंबाई में व्यवस्थित तथा गहरी रेखा प्रायः दोष रहित है। ऐसी रेखा होने से जातक का स्वास्थ्य सदैव अच्छा रहता है। ऐसी रेखा को शुभ माना गया है। जातक कार्य कुशल व परिश्रमी होता है। किसी भी कार्य को पूर्ण लगन से कर सर्वश्रेष्ठ परिणाम हासिल करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. दोनों हाथ में असमान जीवन रेखा

यदि एक हाथ में जीवन रेखा दूषित, खंड़ित व टूटी हुई हो व दूसरे हाथ में पूर्ण हो तो फलित पूर्ण हाथ की रेखा वाला ही होगा तथा पहले हाथ का दोष निष्फल होगा।

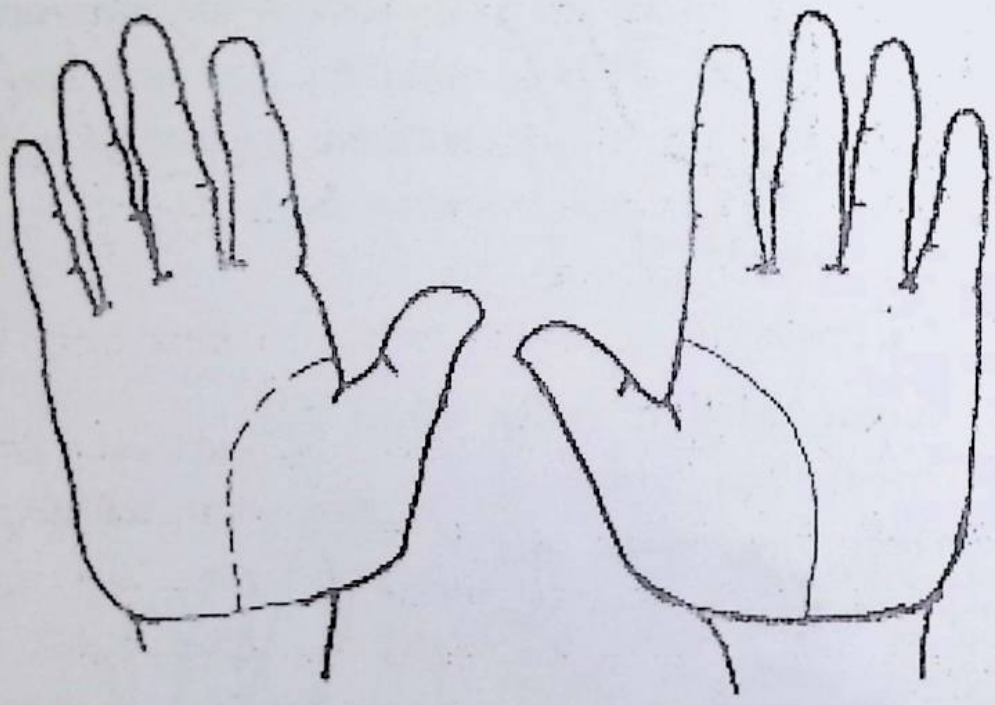

जीवन रेखा का समापन

जिस प्रकार जीवन रेखा के प्रारंभ होने वाले स्थल का महत्व है उससे विभिन्न फलित प्राप्त होते है ठीक उसी प्रकार जीवन रेखा की समाप्ति जिस स्थल पर होती है उस स्थल का गुण व फलित जीवन रेखा पर प्रभाव ड़ालता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. शुक्र पर्वत क्षेत्र में समाप्त होने वाली जीवन रेखा

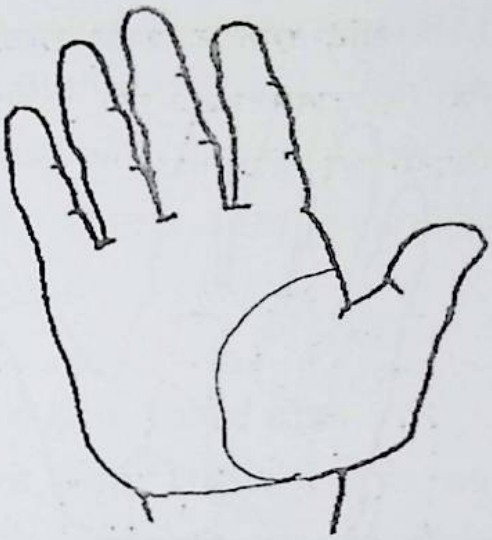

गुरू पर्वत क्षेत्र से प्रारंभ हो अर्धचंद्राकार रूप में शुक्र क्षेत्र को घेरते हुये वापस शुक्र क्षेत्र में समाप्त होने वाली जीवन रेखा, अच्छे स्वास्थ्य, सुखद दामपत्य एवं बड़े परिवार में वैभव के साथ जीवन व्यापन की द्योतक है। जातक अपने सभी दायित्वों का निर्वाह करता हुआ कुटुंब की सेवा करता है तथा समाज में उच्च स्थान प्राप्त करता है।

2. मणिबंध के ऊपरी क्षेत्र में समाप्त होने वाली जीवन रेखा

मणिबंध से ऊपर चंद्र क्षेत्र के नीचले सिरे पर समाप्त होने वाली जीवन रेखा बहुत कम हाथों में दृष्टिगत होती है। जातक सम्मानीत व आध्यात्म की ओर आकृष्ट रहता है। वह दैनिक जीवन में सदैव निष्ठावान, चरित्रवान एवं सब पर दया करने वाले साधु पुरूष होते है। इन्हें भौतिक व सांसारिक बंधन स्वीकार नहीं होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. चंद्र क्षेत्र में समाप्त होने वाली जीवन रेखा

यदि जीवन रेखा एक ओर खिसकती हुई चंद्र क्षेत्र में चली जाती है तो जातक के जीवन में चंद्र क्षेत्र के गुणों का समावेश हो जाता है। जातक कल्पनाओं में रहता है तथा प्रकृति प्रेमी, कलाकार तथा समुद्रि यात्राओं का शौकिन रहता है। जीवन रेखा अचानक मुड़कर चंद्र क्षेत्र में चली जावे तो जातक मानसिक रोगी, उन्माद ग्रस्त या मिर्गी का रोगी भी हो सकता है।

4. मणिबंध के अंदर समाप्त होने वाली जीवन रेखा

जीवन रेखा गुरू क्षेत्र से होती हुई मणिबंध रेखा के अंदर तक पहुंचे तब जातक लंबी आयु वाला अच्छे स्वास्थ्य व प्राण शक्ति की अधिकता वाला होता है।

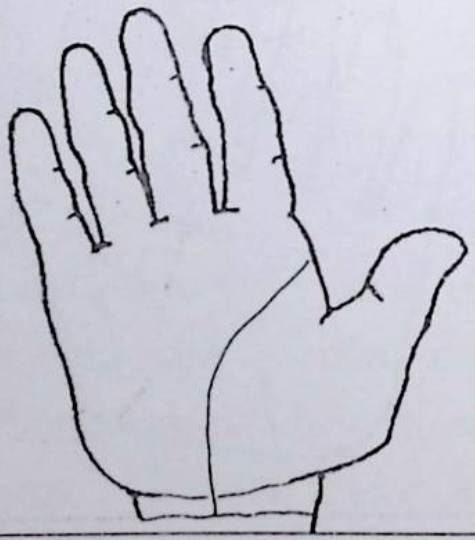

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन रेखा के समापन पर चिन्हों का प्रभाव

जिस प्रकार जीवन रेखा का स्थल विशेष पर समापन अपना फलित बदल देता है। ठीक उसी प्रकार रेखा के समापन पर अगर चिन्ह विशेष या कोई आकृति बनती हो तो जातक के गुणों व फलादेश में परिवर्तन आता है। प्रत्येक आकृति के साथ फलादेश भिन्न है।

1. जीवन रेखा के समापन पर द्विप चिन्ह होना

जीवन रेखा के अंत होने के साथ सिर पर द्वीप का होना अनिष्ट कारक है। जातक सदैव मनोरोगी तथा मानसिक रोगों के दौरे से ग्रस्त रहेगा।

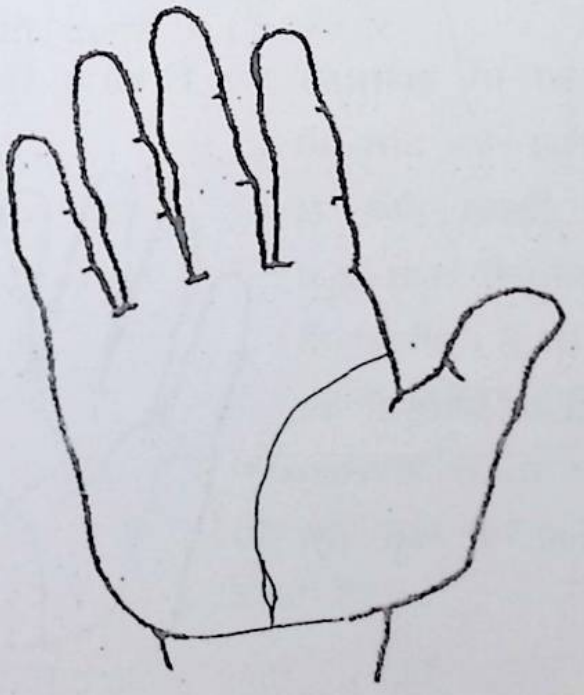

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. जीवन रेखा के समापन पर मछली की आकृति का होना

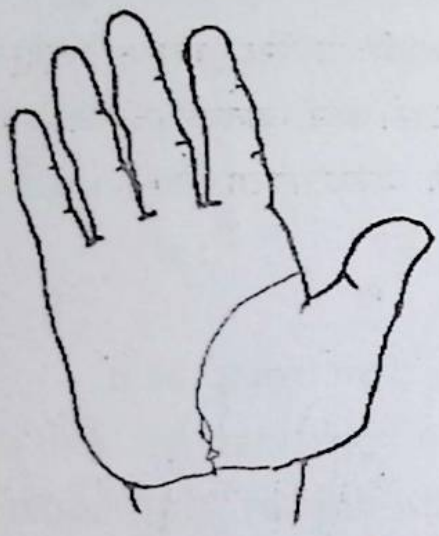

जीवन रेखा के अंत पर मछली की आकृति बनने पर, जातक धार्मिक वृति वाला आध्यात्म में रूचि रखने वाला, धन–धान्य से पूर्ण जीवन व्यापन करता है। उदारवादी तथा सभी धार्मिक कार्यो को पूर्ण कर सदमार्ग पर चलने वाला होता है।

3. जीवन रेखा के समापन पर त्रिकोण चिन्ह का होना

जीवन रेखा के अंत में त्रिकोण चिन्ह स्थित होने से ऐसा जातक वातुनी तथा कम बुद्धि वाला होता है। जीवन के उत्तरार्द्ध में उसे कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा बुढ़ापा मुसीवतों में गुजरता है।

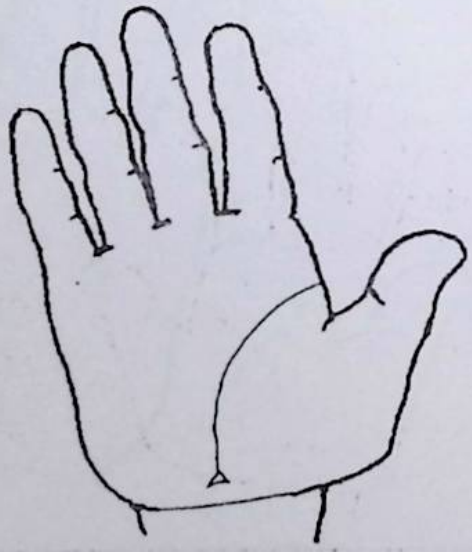

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. जीवन रेखा के समापन पर गुणन चिन्ह

जब जीवन रेखा का अंत गुणन चिन्ह पर हो तब जातक की अचानक मृत्यु का योग होता है।

एक से अधिक गुणन चिन्ह बिमारी व जरा अवस्था में कष्ट व विपत्तियों को दर्शाते है।

यदि कोई शाखा नीचे की ओर जाकर गुणन चिन्ह पर मिले तब भी आकस्मिक मृत्यु का योग होता है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. जीवन रेखा के समापन पर बिन्दु चिन्ह

जीवन रेखा का अंत बिंदु या काले रंग के बिंदु या कई बिंदुओं पर हो तो यह अशुभ है। जातक की अचानक मृत्यु या हत्या होने का संकेत है।

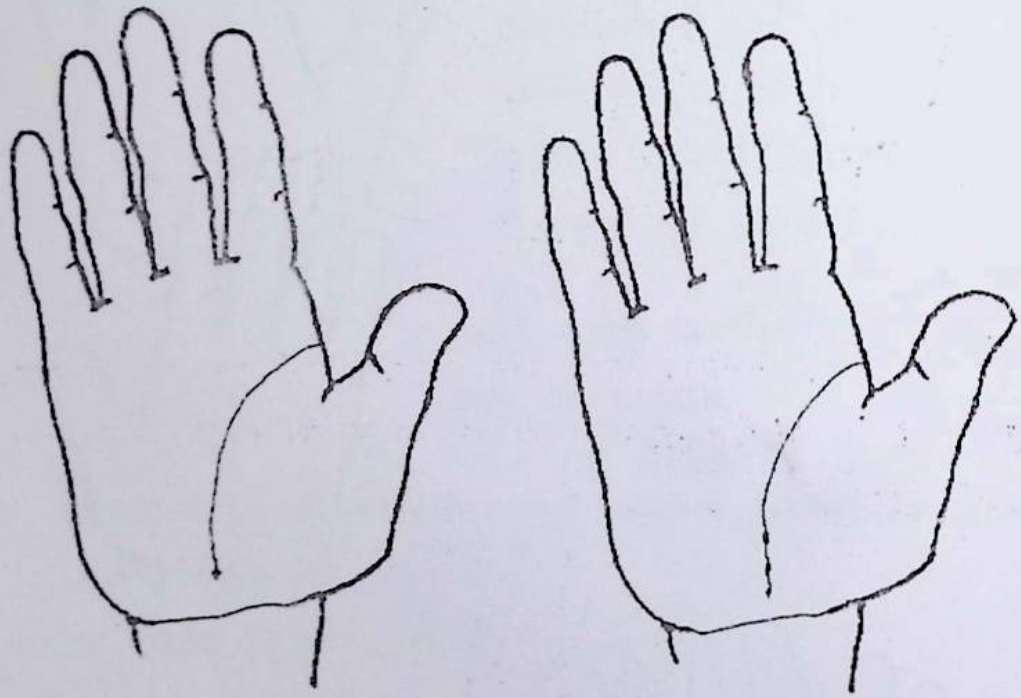

6. जीवन रेखा के समापन पर आड़ी, छोटी-छोटी रेखाएं

जीवन रेखा के अंत पर छोटी-छोटी आड़ी रेखाएं हो तो अनिष्टकारक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

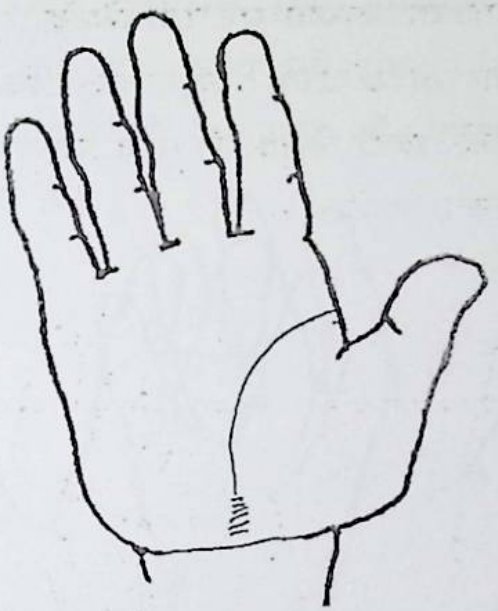

ये रेखाएं जीवन रेखा को काटती हुई हो तो अचानक मृत्यु का योग बनाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. जीवन रेखा के समापन पर छोटी–छोटी समानान्तर रेखाएं

जीवन रेखा मध्य तक पहुंचकर रुक जावे तथा वही समानान्तर छोटी, छोटी रेखा हो तब जातक की आकस्मिक मृत्यु दर्शाती है।

समानान्तर रेखा न हो केवल जीवन रेखा मध्य तक पहुंच कर खत्म हो जावे तब भी मृत्यु दर्शाती है।

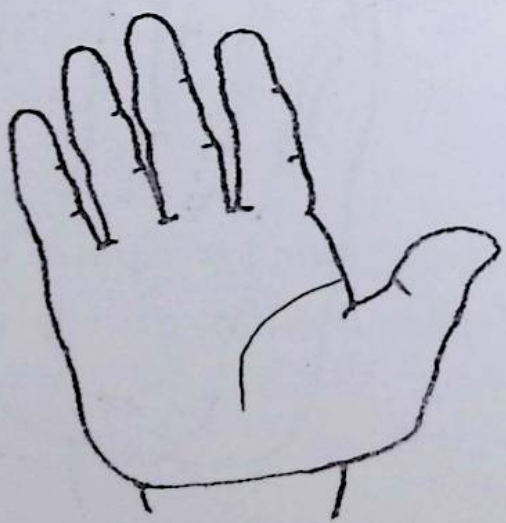

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४. जीवन रेखा का समापन पुंछ आकृति पर

जीवन रेखा का अंत गाय की पुंछ आकृति पर हो तो धन अभाव व जीवन के उत्तरार्द्ध में परेशानी व कष्टप्रद जीवन का संकेत है।

इस आकृति से निकलकर कोई शाखा चंद्र क्षेत्र में चली जावे तब मानसिक रोग या उन्माद की अवस्था व पागलपन की ओर इंगित होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

9. जीवन रेखा के समापन पर दो शाखाओं का होना

जीवन रेखा का अंत होने के पहले दो शाखाओं में विभक्त होता है।

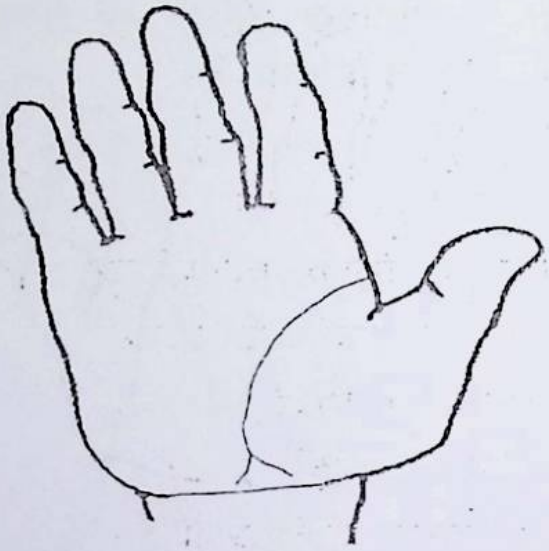

यदि विभक्त रेखा शुक्र क्षेत्र की तरफ मुड़ जावे तब जातक भौतिक वादी होता है। वह गलत कार्यो में रूचि रखता है जिससे उसका दामपत्य जीवन कष्टकर रहता है तथा जननांग संबंधी रोगों से ग्रस्त रहता है। ऐसे जातक का तलाक भी हो सकता है तथा उसका बुढ़ापा कष्ट व परेशानियों भरा रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि एक रेखा विभक्त होकर चंद्र क्षेत्र में जाये तो जातक मनोरोगी तथा व्यसनी होकर रोगों से ग्रस्त रहता है तथा जीवन में यात्राएं बहुत करता है तथा उसके मस्तिष्क में विकार उत्पन्न होते है। जीवन का आखरी समय बहुत कष्टों में पूर्ण होता है।

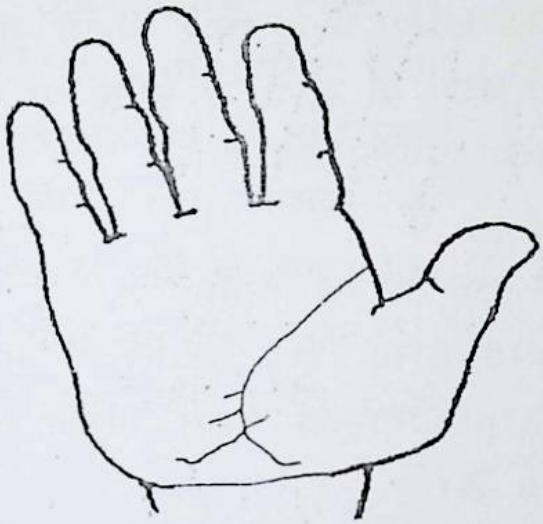

10. जीवन रेखा का समापन भाग्य रेखा के साथ होना

जीवन रेखा अंत तक पहुंच कर भाग्य रेखा के साथ मिल कर ऊपर उठ जाती है तब जातक को परिवार व कुटुंब का सहयोग प्राप्त होता है तथा जीवन रेखा के छोटे होने से दुर्भाग्य का प्रभाव नष्ट हो जाता है तथा भाग्य रेखा के प्रभाव से संकट टल जाते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन रेखा का अन्य रेखाओं से संबंध

जब जीवन रेखा से कोई शाखा निकलकर किसी मुख्य शाखा से मिलती है तो उस रेखा के गुणों में वृद्धि या दोष होने पर भिन्न-भिन्न फलादेश प्राप्त होते है।

1. जीवन रेखा की शाखा एवं भाग्य रेखा

जब जीवन रेखा की कोई शाखा उर्ध्व स्थिति में भाग्य रेखा से मिले तब जातक का स्वास्थ्य बहुत अच्छा तथा भाग्य उदय का प्रतीक होता है।

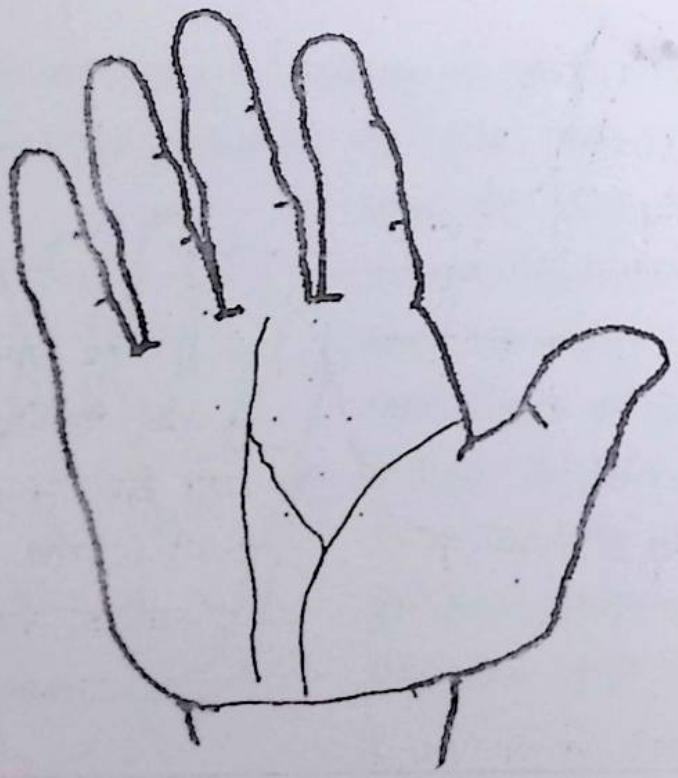

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. जीवन रेखा की शाखा मस्तिष्क रेखा से मिले

जब जीवन रेखा से कोई एक या अनेक रेखा मस्तिष्क रेखा से उर्ध्व रूप में मिले तब जातक को अपने से बड़ों से धन लाभ, पारिवारिक सुख सम्मान तथा यश की प्राप्ति होती है।

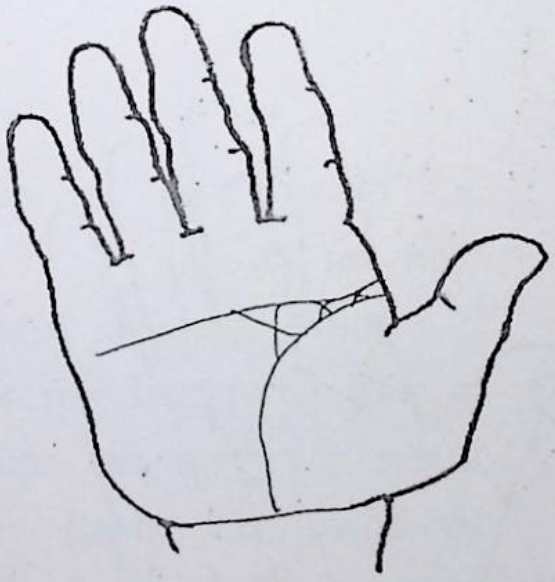

इसके विपरित ये रेखा आपस में एक दूसरे को काटकर मस्तिष्क रेखा से मिले तब माता–पिता को जातक से पीड़ा पहुंचती है तथा सम्मान व समृद्धि में कमी आती है जिससे पारिवारिक संकट आ जाता है व जातक का पूवार्द्ध जीवन कष्टों में गुजरता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. जीवन रेखा व हृदय रेखा से मिलना

जीवन रेखा के मध्य से निकलकर उर्ध्वरूप में हृदय रेखा से मिल वही पर कोई शाखा रूक जावे तब जातक घमंड़ी हो, जीवन के निर्णय गलत ले, नुकसान उठाता है और अपने अच्छे जीवन को कष्टपूर्ण बना लेता है।

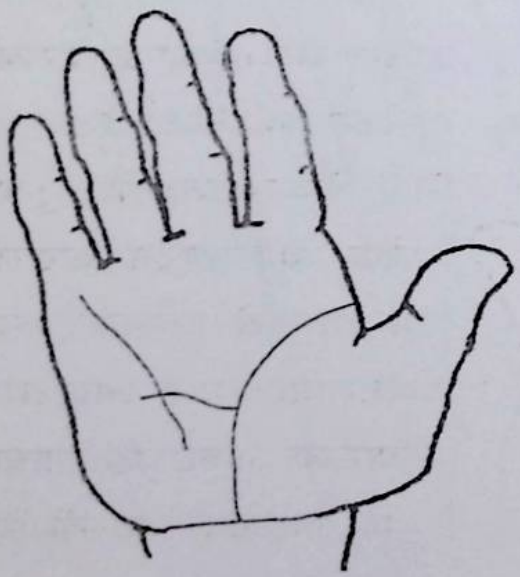

4. जीवन रेखा व बुध रेखा का मिलना

जीवन रेखा के मध्य से कोई शाखा उर्ध्व रूप में उठकर बुध रेखा को काटे तो जातक को नौकरी या व्यवसाय में स्वास्थ्य के कारण नुकसान होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. जीवन रेखा सूर्य रेखा का शुक्र क्षेत्र तक पहुंचना

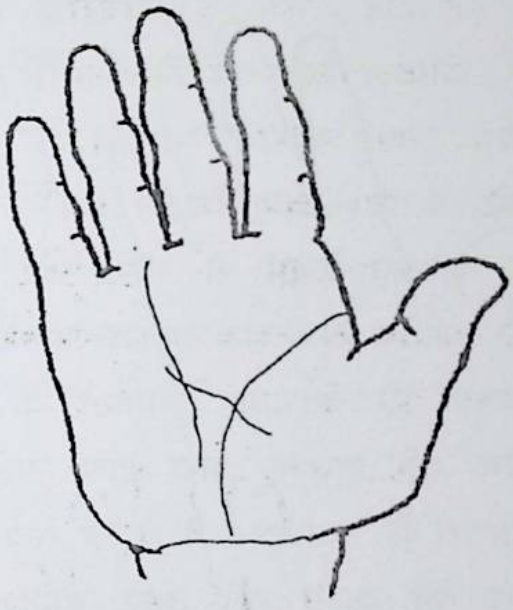

जीवन रेखा से कोई शाखा उर्ध्व दिशा में निकल एक ओर सूर्य पर्वत पर तथा दूसरी ओर शुक्र पर्वत पर पहुंचे तब जातक को समाज में प्रतिष्ठा अपने जीवनसाथी (पुरूष/स्त्री) द्वारा प्राप्त होती है। ऐसे जातक की विवाह उपरांत धन व मान में वृद्धि होती है।

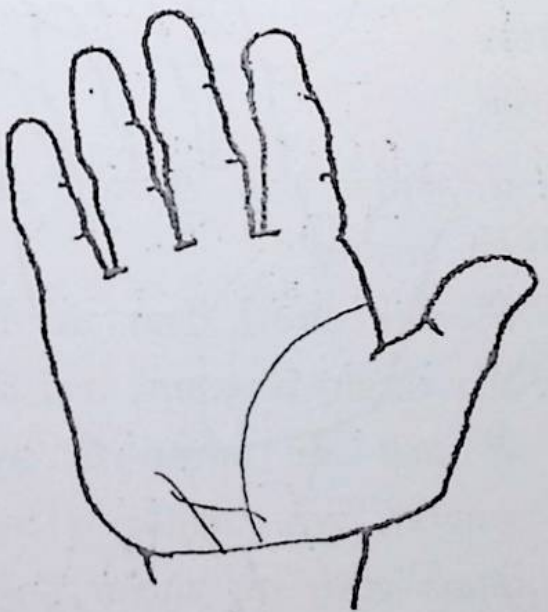

6. जीवन रेखा व वासना रेखा का मिलना

जीवन रेखा या मुख्य रेखा की शाखा वासना रेखा से मिले तब अत्यधिक काम भाव तथा व्यसनी होकर वह जातक को रोग ग्रस्त करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन रेखा से निकलती रेखाएं एवं प्रभाव रेखाएं

जीवन रेखा से निकलती हुई उर्ध्व व आड़ी रेखाओं का प्रभाव तथा प्रभाव रेखाओं द्वारा काटने पर उत्पन्न गुणों के बारे में विश्लेषण निम्न है।

1. जीवन रेखा से नीचे की ओर पहुंचती शाखाएं

जीवन रेखा पर अलग-अलग स्थानों से शाखाएं निकल कर नीचे की तरफ जाये तब यह जातक के स्वास्थ्य में कमी तथा धन की कमी की ओर इंगित करती है। यह जीवन शक्ति में कमी भी बताती है।

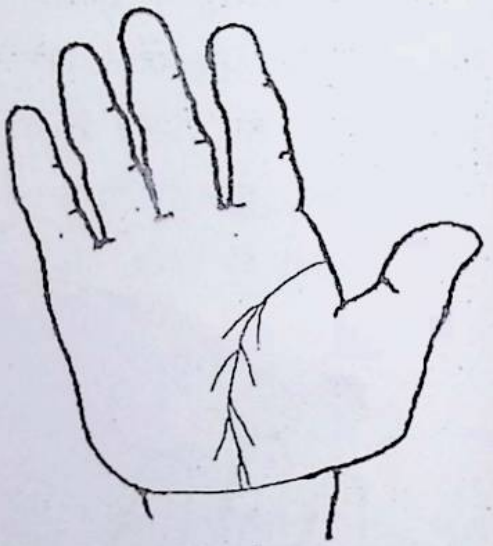

2. जीवन रेखा से उपर उठती हुई शाखाएं

जब जीवन रेखा के दोनों ओर शाखाएं निकलकर उर्ध्व दिशा में जायें तब जातक के उत्तम स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि व अच्छी जीवन-शक्ति की द्योतक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. जीवन रेखा से कोई शाखा शनि क्षेत्र पर पहुंच द्विप, चिन्ह बनावे

जीवन रेखा से निकल कर कोई शाखा शनि पर्वत क्षेत्र पर पहुंच कर द्विप आकृति बनाने पर दुर्घटना की सूचक है। ऐसे जातक की शरीर के निचले हिस्से की दुर्घटना में क्षति होने की संभावना बनी रहती है।

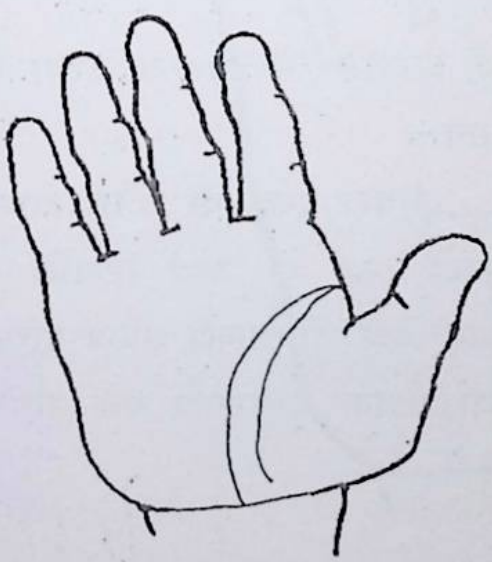

4. जीवन रेखा के समानान्तर सहायक रेखा का आरंभ से अंत तक पहुंचना

जीवन रेखा के प्रारंभ से सहायक रेखा उत्पन्न हो समानान्तर चलते हुये अंत तक पहुंचे तब जातक के मस्तिष्क में पीड़ा रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. जीवन रेखा की शाखा गुरू क्षेत्र पर पहुंच चतुर्भूज बनावे

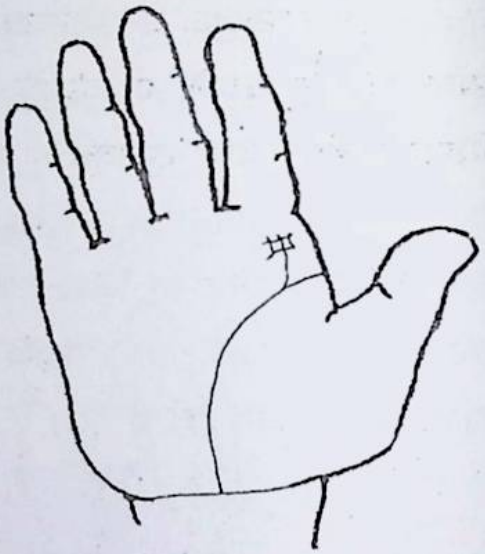

गुरू क्षेत्र पर जीवन रेखा का पहुंचना शुभ कारक है तथा चतुर्भूज सिरे पर बनाना सौभाग्य सूचक है। जातक आदर्शवादी तथा अनुशासन प्रिय होता है तथा अध्यापन व शिक्षक का कार्य करने में उत्कृष्ट होता हैं।

6. जीवन रेखा की शाखा उर्ध्व स्थिति में भाग्य रेखा से मिले

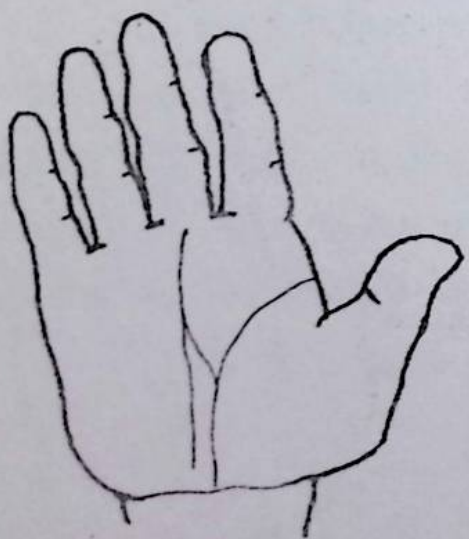

जीवन रेखा से कोई शाखा भाग्य रेखा से उर्ध्व स्थिति में संपर्क करे तो भाग्य उदय सूचक तथा उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. जीवन रेखा की शाखाएं प्रभाव रेखा से कटी होने पर

जीवन रेखा पर उर्ध्व शाखाएं यदि प्रभाव रेखाओं द्वारा कटी हो या जीवन रेखा को काटती हो तो शासकीय उलझने, मुकदमें मे हानि तथा दामपत्य जीवन में संबंध विच्छेद होने की सूचक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन रेखा के दोष

जीवन रेखा की कम लंबाई, बनावट व आकृति में भिन्नता से रेखा दुषित हो जाती है और इसके परिणाम स्वरूप दुष्प्रभाव होते है।

1. जीवन रेखा का छोटा होना

जीवन रेखा की लंबाई कम होने पर जातक की आयु कम होगी तथा स्वास्थ्य भी कमजोर होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. जीवन रेखा का मध्य में टूटा होना

जीवन रेखा का चलते–चलते बीच में टूट जाना या लय बंध न होना किसी विकट बिमारी या असाधारण दुर्घटना का संकेत है। आयु के अनुसार तो उस आयु में विपत्ति आने के घोषणा कर सकते है परन्तु वापस जीवन रेखा का बनना सकंट के टल जाने का संकेत है।

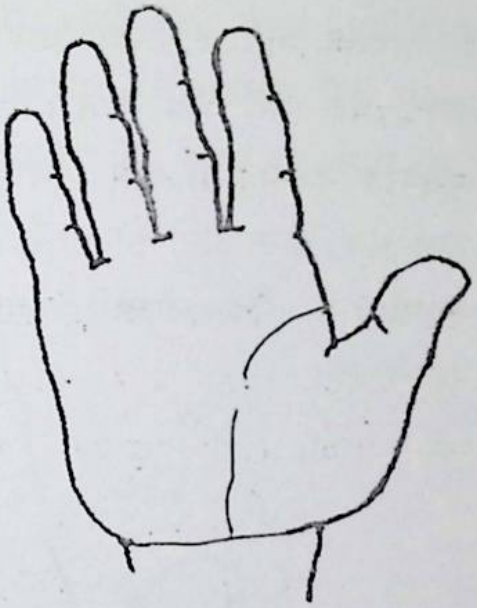

3. जीवन रेखा का टूटना नीचे की ओर मुड़ना

जीवन रेखा का निचला हिस्सा टूट कर शुक्र क्षेत्र पर मुड़ा होना, आकस्मिक दुर्घटना तथा मृत्यु का संकेत होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. जीवन रेखा का सिरे पर या अंतिम भाग में, स्पष्ट न होना

जब जीवन रेखा प्रारंभ में या अंत में अस्पष्ट हो या धुमिल दिखाई दे तब जातक का स्वास्थ्य कमजोर होता है। उसे श्वास व पेट संबंधी व्याधियां रहती है।

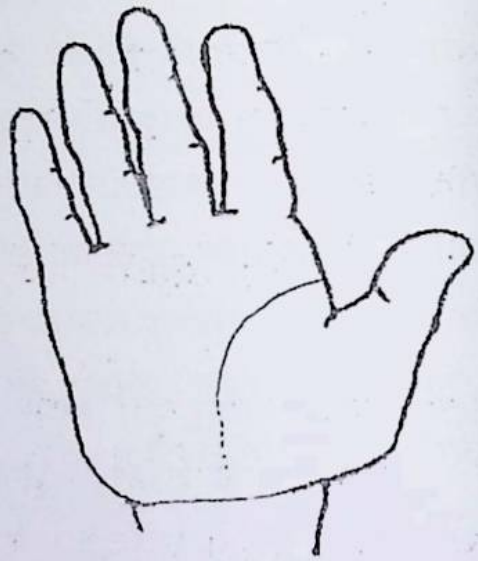

5. जीवन रेखा के मध्य द्विप या आकृति होना

जब जीवन रेखा चलते–चलते मध्य क्षेत्र में द्विप आकृति वाली हो तब जातक को उम्र के मध्य दौर में शारीरिक पीड़ा या दुर्घटना का सामना करना पड़ता है या बिमारी के दौरान पीड़ा सहन करनी पड़ती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. जीवन रेखा के ऊपर क्रास, बिंदु तथा आड़ी रेखाएं

जीवन रेखा पर आड़ी रेखाएं, बिन्दु, क्रास, अशुभ चिन्ह हो तो ये प्राण शक्ति में कमी लाते है तथा शारीरिक अस्वस्थता तथा दुर्घटनाओं की संभावना बताते है। परन्तु चतुर्भूज का चिन्ह सौभाग्य कारक है तथा बिगड़ी हुई परिस्थितियों को दुरूस्त करता है।

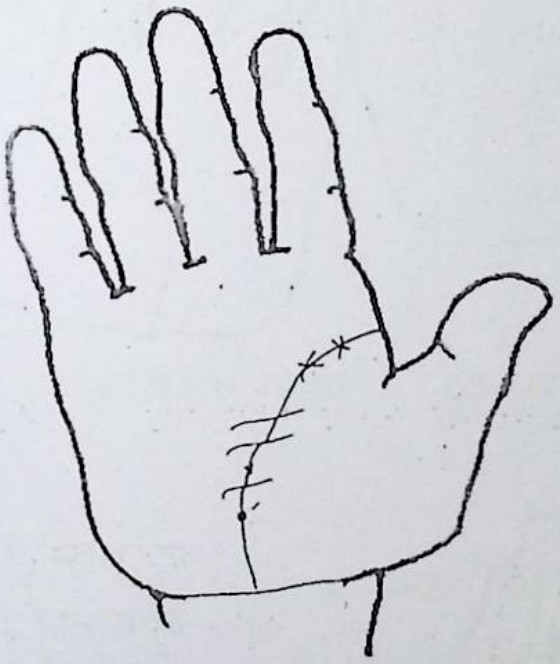

जीवन रेखा सें संबंधित चिन्ह

पहले विभिन्न शुभ व अशुभ चिन्हों के बारे में बताया जा चुका है परन्तु इन चिन्ह की अलग-अलग स्थानों पर उपस्थिति अलग-अलग गुणों को प्रकट करती है इन गुण व दोषों का विश्लेषण निम्न है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. जीवन रेखा पर वृत्त का चिन्ह

जीवन रेखा पर एक वृत्त आंखों की बिमारी व दो वृत्त पूर्ण अन्धत्व की ओर संकेत करते है।

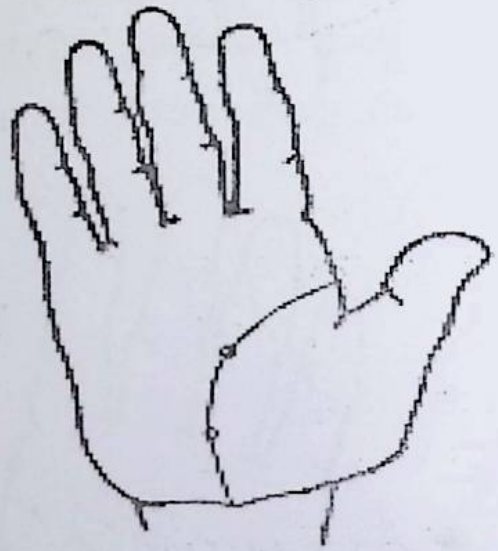

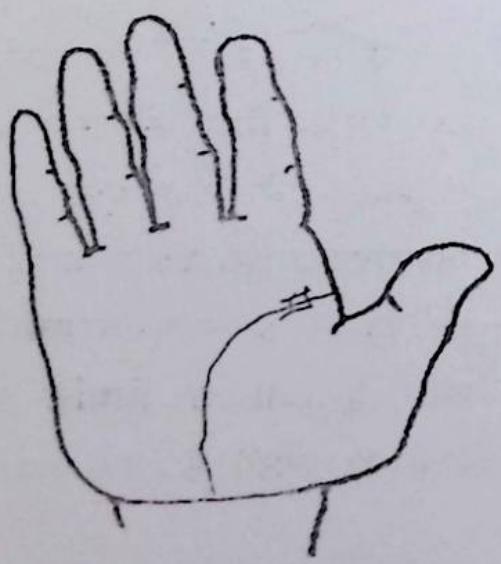

2. चतुर्भूज का चिन्ह जीवन रेखा पर

चतुर्भूज एक शुभ संकेत है। यह जातक को परेशानियों से निजात दिलाता है। अलग-अलग स्थिति में इसका अलग-अलग प्रभाव है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ. रेखा टूटी व चारों ओर चतुर्भूज बने

ऐसी स्थिति में विपत्ति आयेगी परन्तु उसमें से जातक सकुशल निकल जावेगा।

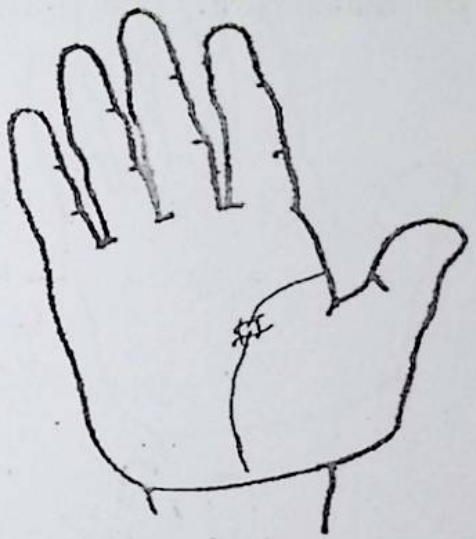

1. जीवन रेखा पर क्रास या चिन्ह हो उस पर चतुर्भूज बने

जीवन रेखा पर क्रास का अशुभ चिन्ह हो उस पर चतुर्भूज बने तब क्रास के चिन्ह का अशुभ प्रभाव चतुर्भूज के कारण खत्म हो जाता है तथा दुर्घटना व विपत्ति से रक्षा हो जाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. जीवन रेखा के पास ऊपरी क्षेत्र (शुक्र क्षेत्र) में चतुर्भूज

शुक्र क्षेत्र में चतुर्भूज कामूक व गढ़ी प्रवृत्तियों से जातक को बचाता है।

3. जीवन रेखा के अंत (शुक्र क्षेत्र) में चतुर्भूज

ऐसी स्थिति में जातक को परिवार से दूर कारावास में रहना पड़ता है या उसे घर का त्याग करना पड़ता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. जीवन रेखा के बाहर मंगल के मैदान अथवा निम्न मंगल क्षेत्र में

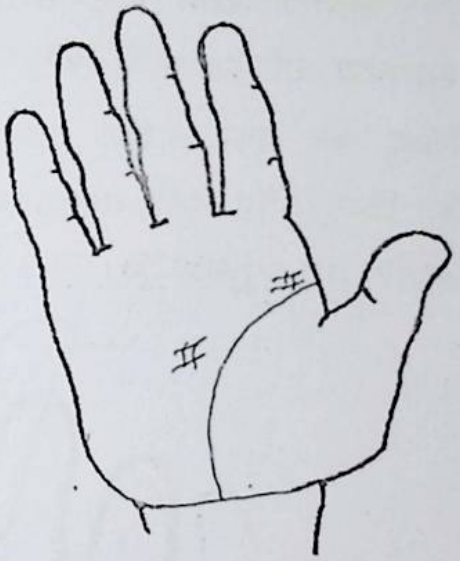

यह स्थिति जातक को परिवार से दूर रख एकांत वास देती हैं।

5. जीवन रेखा पूर्ण न हो या श्रृंखलाकार हो तो व चतुर्भूज का चिन्ह भी

जब जीवन रेखा दोष युक्त या श्रृंखलाकार हो टूटी हुई हो व उस स्थान पर चतुर्भूज हो तब जीवन रेखा के दोषों को यह चतुर्भूज दूर करता है। दुर्घटनाओं व मुसिबतों से जातक की रक्षा होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब. जीवन रेखा पर धब्बे या बिन्दु

जीवन रेखा पर धब्बे या बिन्दु अशुभ होते है तथा स्वास्थ्य की खराबी तथा बिमारी की ओर संकेत करते है। बिन्दु का बड़ा होकर धब्बा होना ओर भी खतरनाक सूचक है। बिन्दु और धब्बे का अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग खतरे का सूचक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. जीवन रेखा के प्रारंभ में

ऐसी स्थिति में जीवन के प्रारंभ में जातक को शारीरिक कष्ट व स्वास्थ्य की परेशानियां रहती हैं।

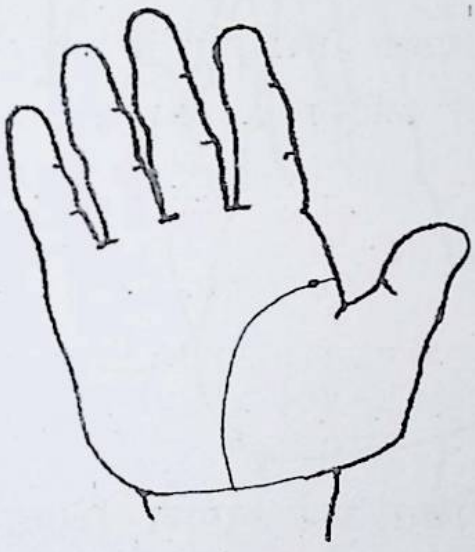

2. जीवन रेखा के अंत में

ऐसी स्थिति में जातक की आकस्मिक मृत्यु अथवा हत्या होने का संकेत है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. जीवन रेखा के मध्य में चंद्र क्षेत्र में स्थित भाग में बिन्दु होने पर मस्तिष्क में पीड़ा या दर्द सदैव बना रहता है तथा आगे जातक को गठिया रोग हो सकता है।

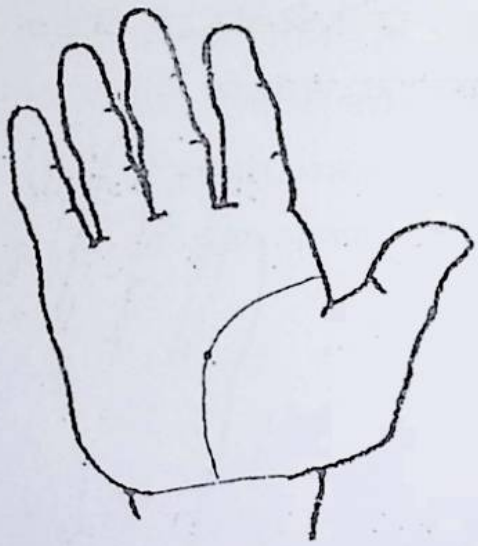

जीवन रेखा पर गुणन चिन्ह

जीवन रेखा पर गुणन चिन्ह अशुभ है तथा जीवन मे कष्ट, परेशानियों को प्रकट करते है।

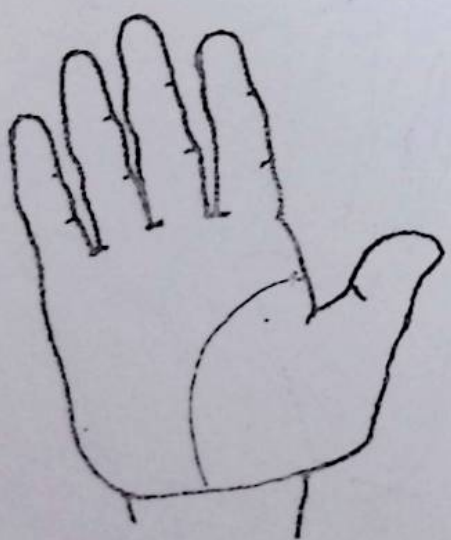

1. जीवन रेखा पर प्रारंभ में गुणन चिन्ह बचपन में बिमारी तथा स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का संकेत है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. जीवन रेखा पर गुणन जीवन रेखा के प्रारंभ पर दो या अधिक होने से वह जातक में बेशर्मी व अत्यधिक कामुकता के द्योतक हैं।

3. भाग्य रेखा एवं जीवन रेखा के बीच गुणन चिन्ह अर्थात मंगल के क्षेत्र के मध्य में गुणन चिन्ह होने पर परिवार तथा साथियों द्वारा जातक के जीवन में बाधाएं उत्पन्न होती है।

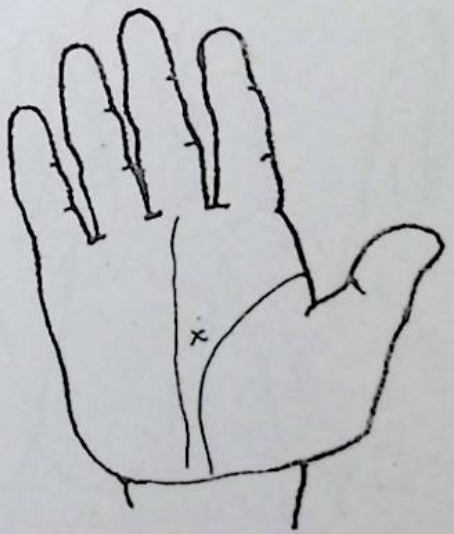

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. जीवन रेखा की शाखा पर गुणन चिन्ह की स्थिती अनुसार आयु की गणना के हिसाब से आकस्मिक आघात तथा दुर्घटना का संकेत है।

5. त्रिकोण का चिन्ह सदैव शुभ कारक होता है। केवल जीवन रेखा के अंत में त्रिकोण जातक को धोखेबाज तथा बड़बोले व्यक्तित्व का सूचक है। अन्य स्थानों पर, घर परिवार तथा भूमि व खेतीहर जातक के लिये उन्नति कारक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. जीवन रेखा पर छोटी–छोटी आड़ी रेखाएं गणना के हिसाब से उस आयु में स्वास्थ संबंधी परेशानियां उत्पन्न करती है।

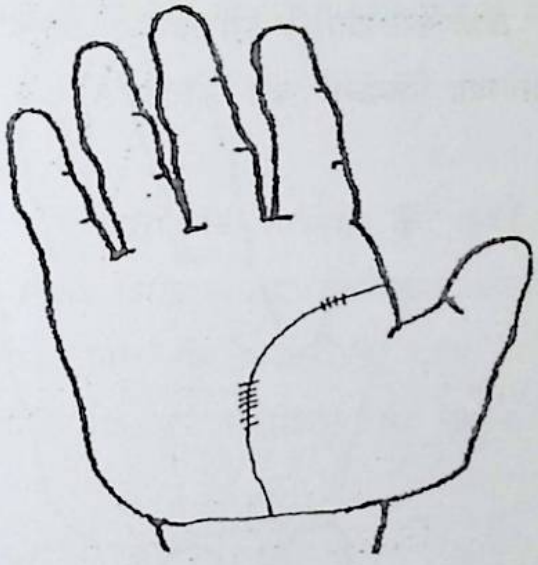

7. जीवन रेखा पर जाल का चिन्ह जातक के स्नायु तंत्र को गणना के हिसाब से कमजोर करता है तथा स्वास्थ्य संबंधी व्याधियां उत्पन्न होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. जीवन रेखा पर द्विप का चिन्ह अशुभ है परन्तु इसका असर ज्यादा समय नही रहता। कुछ स्थान उपरांत परिस्थितियां व विपत्तियां ठीक हो जाती है। परन्तु अलग–अलग स्थान पर विपत्तिया अलग किस्मों की होती है।

1. जीवन रेखा के प्रारंभ में द्विप

जब जीवन रेखा के प्रारंभ होने वाले स्थान पर ही द्विप चिन्ह हो तब बच्चे के जन्म के बाद स्वास्थ्य खराब रहेगा तथा उसके जन्म से संबंधित रहस्य रहेगें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. जीवन रेखा के मध्य तथा आगे के स्थान पर द्विप चिन्ह

उम्र की गणना के हिसाब से उस समय व्यवधान तथा विपत्तियां लेकर आते है परन्तु ये विपत्तियां स्थाई नहीं होती है।

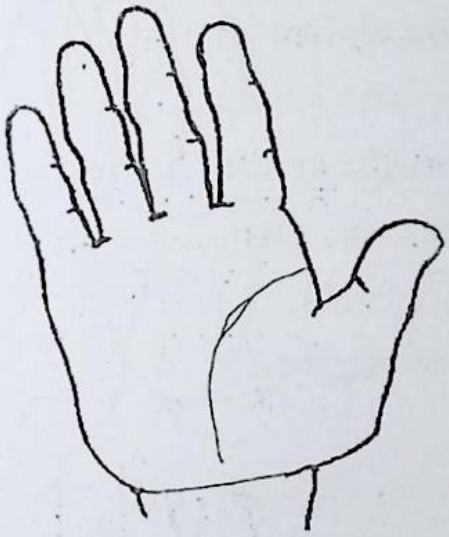

3. जीवन रेखा के प्रारंभ व मस्तिष्क रेखा के अंत में

द्विप चिन्ह एक रेखा के प्रारंभ व दूसरी के अंत में होने पर जातक की वाणी का तंत्र व भ्रमण तंत्र दोनों खराब या अस्वस्थ रहते है।

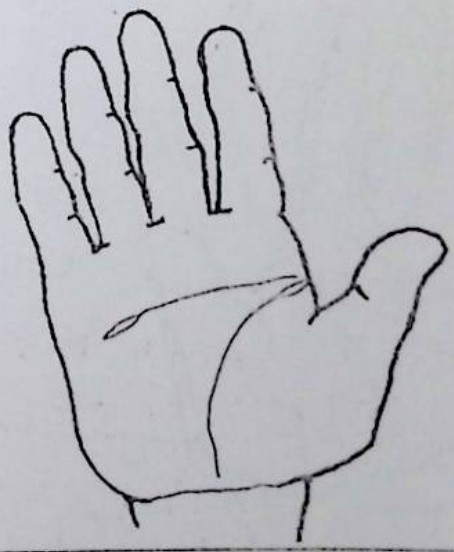

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. जीवन रेखा के मध्य में द्विप एवं ऊपर व नीचे जाली या आड़ी रेखाएं

जब जीवन रेखा में द्विप हो तथा ऊपर अथवा नीचे आड़ी रेखाएं या जाली बनती हो तब जातक कमजोर स्वास्थ्य वाला, कायर तथा निर्बल होता है। छोटी-छोटी समस्याओं से घबराने वाला होता है।

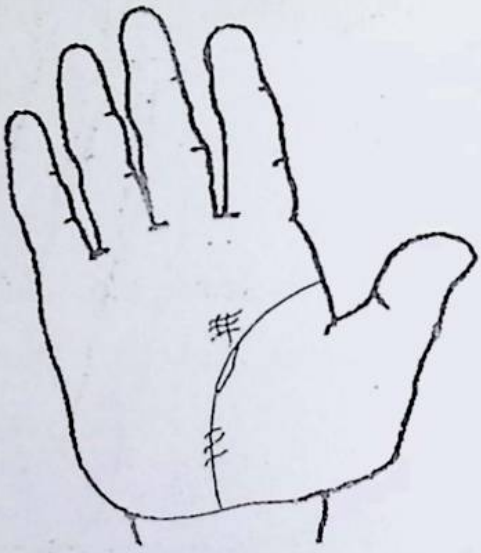

5. जीवन रेखा द्विप व हृदय रेखा पर बिन्दु

जीवन रेखा पर द्वीप तथा हृदय रेखा पर बिन्दु हो तब जातक को हृदयघात हो सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि मस्तिष्क रेखा पर बिंदु हो तब मस्तिष्क में पक्षघात हो सकता है।

6. जीवन रेखा पर द्विप चिन्ह से शाखा पर जाली

जीवन रेखा पर द्विप चिन्ह से कोई शाखा निकलकर शनि क्षेत्र पर पहुंच कर जाली का आकार बनाये तब जातक को मस्तिष्क में पक्षघात का संकेत है। मस्तिष्क रेखा पर भी द्विप चिन्ह इसका संकेत है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन रेखा तथा प्रभाव रेखाएं

मानव के हाथ में मुख्य रेखाओं के अपने नैसर्गिक गुण विद्यमान होते है। परन्तु हथेली में अन्य रेखाओं के साथ प्रभाव रेखाएं अपना अलग अस्तित्व बनाकर अपनी विशिष्टताएं उत्पन्न करती है। क्योंकि मुख्य रेखाओं के गुण व अवगुणों को प्रभाव रेखा बड़ा कर या घटाकर आश्चर्यजनक परिणाम देती है। जीवन रेखा का अपना एक बड़ा क्षेत्र होता है अतः सुविधा के लिये हम इस रेखा के अंदर वाले (शुक्र क्षेत्र) भाग का अध्ययन करेंगें।

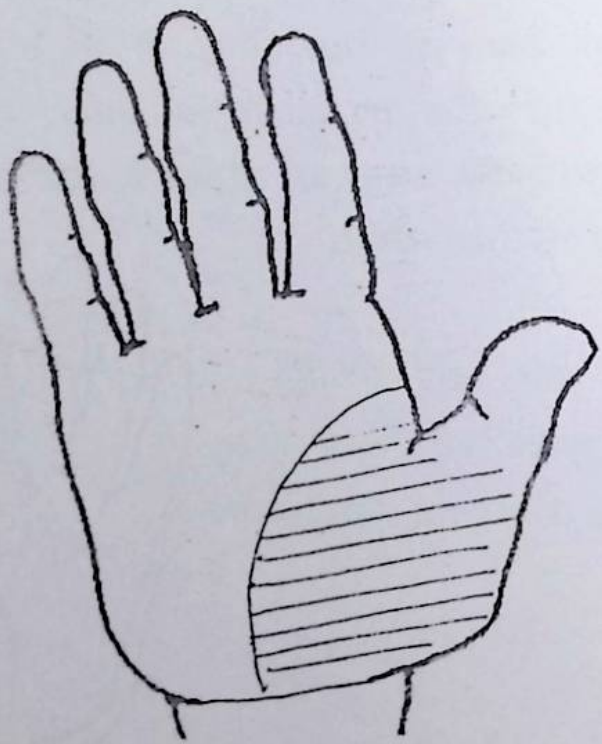

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और बाहर वाले (मंगल क्षेत्र व चंद्र क्षेत्र) भाग का अध्ययन करेगें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. जीवन रेखा के अंदर (शुक्र क्षेत्र) में प्रभाव रेखाएं

जो प्रभाव रेखाएं शुक्र क्षेत्र के अंदर तथा अंगूठे के नीचे वाले भाग में होती है वे इसके अंतर्गत आती है।

1. जीवन रेखा के समानान्तर कोई रेखा मंगल क्षेत्र से मणिबंध तक पहुंचती है। वह मंगल रेखा कहलाती है। यह रेखा सुस्पष्ठ होने पर जीवन रेखा के गुणों को बढ़ाती है तथा शौर्य पराक्रम बढ़ाती है। जातक में आत्मबल अत्यधिक होता है तथा स्वास्थ्य उत्तम रहता है। ऐसे जातक खेलकूद, सेना या पुलिस मे उन्नति करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अगर जीवन रेखा निर्बल हो तो उसके दोष दूर कर उसके अवगुणों को नष्ट कर गुणों में पुष्टता लाती है।

2. जीवन रेखा के समानान्तर शुक्र क्षेत्र में अंगूठे के साथ लगी समानान्तर रेखा अंगूठे के नीचे उर्ध्व दिशा में समान्तर पाई जाने वाली रेखा वाला जातक हर कार्य को लगन के साथ कर अपनी कार्यो में तल्लीन रहता है तथा प्रसन्न व्यक्ति का स्वामी रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. जीवन रेखा के प्रारंभ के साथ मध्य क्षेत्र में खत्म होने वाली प्रभाव रेखा वाला जातक अपने पूवार्द्ध में क्रह्म (बचपन में) बड़ों की आज्ञा का पालन कर परिवार की छत्र छाया में समय व्यतीत करता है।

4. जीवन रेखा के प्रारंभ के साथ समानान्तर रेखा तथा बीच में शाखा से जूड़ी हुई हो एवं शुक्र क्षेत्र में शाखा बारीक–बारीक प्रभाव रेखा में मिली हुई हो तब जातक काम वासना से वशीभूत व पीड़ित रहता है तथा इन गतिविधियों के कारणवश परेशानियों में भी पड़ सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. समानान्तर रेखा सिरे व अंत पर अंगूठे की ओर मुड़ी होने पर व्यक्ति की भावुकता में कमी तथा प्रेम संबंध में विकर्षण की संभावनाएं होना दर्शाती है।

6. जीवन रेखा के समानान्तर रेखा के अंत में द्विप चिन्ह प्रेम संबंधों से समाज मे बदनामी तथा नैतिकता संबंधी व्यवहार में हानि होने का संकेत देती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. जीवन रेखा के अंदर अंगूठे के नीचे प्रभाव रेखा को काटती रेखा एवं गुणन चिन्ह या बिंदु जातक की आकस्मिक मृत्यु या बड़ी दुर्घटना का संकेत देती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. जीवन रेखा के समानान्तर चलती हुई रेखा का अंत शुक्र क्षेत्र में आडी हो जाना जातक का दांपत्य जीवन खराब कर संबंध विच्छेद या तलाक की स्थिति तक पहुंच जाता है।

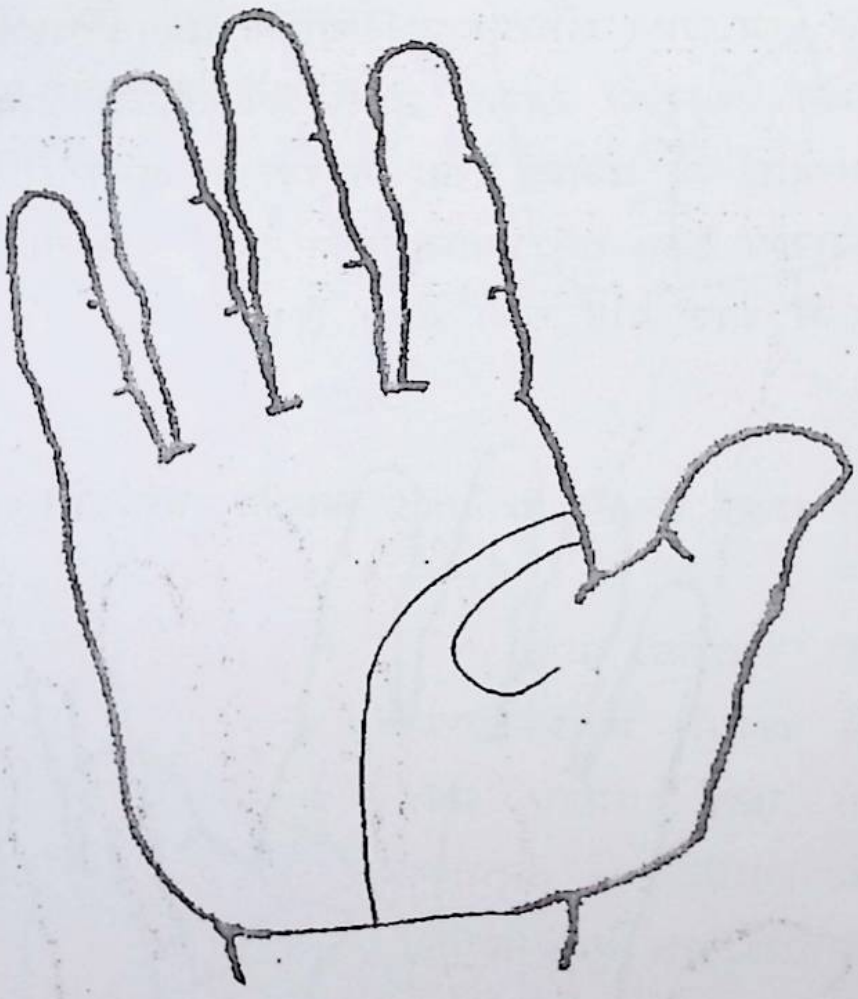

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. जीवन रेखा के बाहर चंद्र क्षेत्र मे स्थित प्रभाव रेखाएं

जिस प्रकार शुक्र क्षेत्र व मंगल क्षेत्र में विद्यमान प्रभाव रेखाएं विशेषताएं बतलाती है ठीक उसी प्रकार जीवन रेखा के बाहर चंद्र क्षेत्र में भी प्रभाव रेखाएं अपना महत्व रखती है। जीवन रेखा प्राण शक्ति का प्रतीक है जब प्राण रेखा इन्हें काटती है तब प्राण शक्ति पर निर्धारण प्रभाव पड़ता है अर्थात् जातक का स्वास्थ्य खराब होता है। जीवन रेखा से ऊपर उठती शाखाएं या प्रभाव रेखा जातक के गुणों में वृद्धि करती है तथा मुख्य रेखा को प्रभाव रेखा स्पर्श करे तो उन रेखाओं व गुणों में चार चांद लग जाते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. जीवन रेखा को प्रभाव रेखा काटे

जब जीवन रेखा को प्रभाव रेखा चंद्र क्षेत्र से शुक्र क्षेत्र में जाये तब जीवन रेखा कटी अवस्था में प्रतीत हो तब जातक को जीवन में पेरशानियां व संकट का सामना करना पड़ता है।

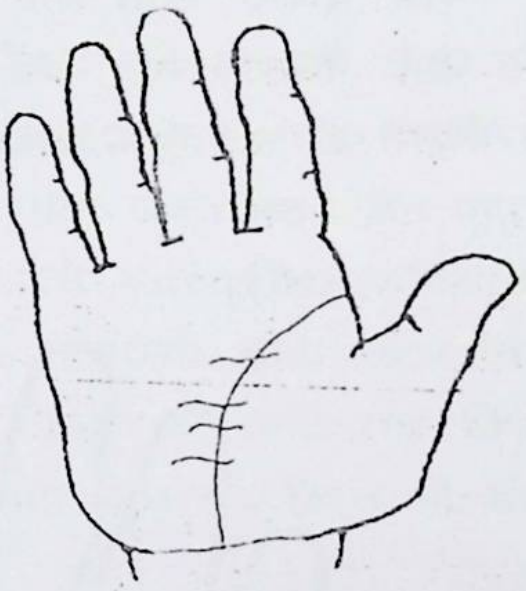

2. जब प्रभाव रेखा जीवन रेखा व भाग्य रेखा दोनों को काटे

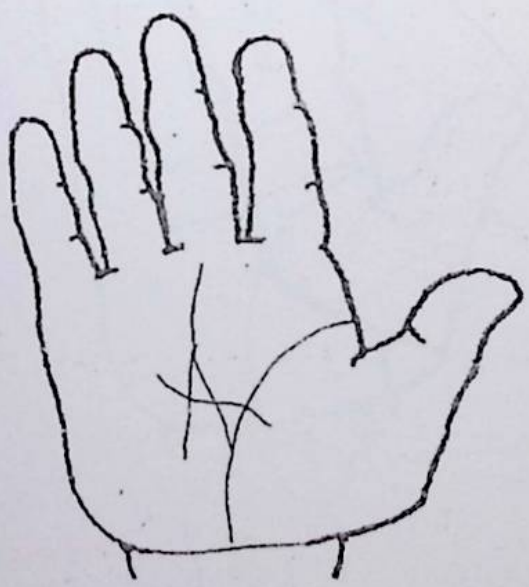

जब जीवन रेखा के साथ–साथ भाग्य रेखा को भी प्रभाव रेखा काटे तब जातक के जीवन में बाहरी लोगों का हस्तक्षेप बहुत बड़ जायेगा तथा जीवन काफी संघर्षपूर्ण होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. जीवन रेखा तथा मस्तिष्क रेखा दोनों को काटे

जब प्रभाव रेखा की लंबाई बड़ी होकर मस्तिष्क रेखा को काटे तब जातक पर मानसिक दबाव रहेगा तथा वह विरोधियों से ड़रा हुआ सदैव मानसिक चिंतन में लीन रहेगा।

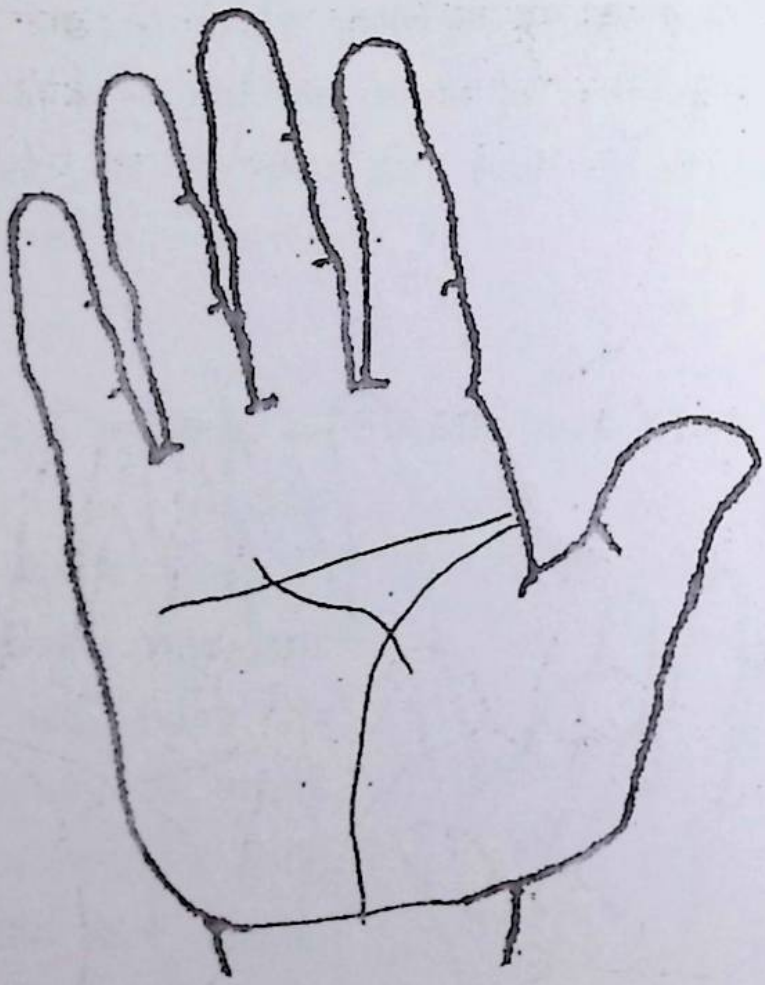

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. जीवन रेखा मस्तिष्क रेखा, हृदय रेखा को काटती हुई प्रभाव रेखाएं

जब प्रभाव रेखा मस्तिष्क रेखा को काटती हुई हृदय रेखा तक पहुंच कर उसे भी काटती हुई ऊपर तक पहुंचे तब जातक के मन व मस्तिष्क दोनों पीड़ा ग्रस्त रहते है। जातक निराशा का भाव लिये रहता है। उसे पारिवारिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा संबंधियों द्वारा छला जाता है यह रेखा ऊपर जाकर विवाह रेखा को काटे तब विवाह रेखा समस्या अथवा विवाह के बाद दांपत्य जीवन में दरार पड़ती है।

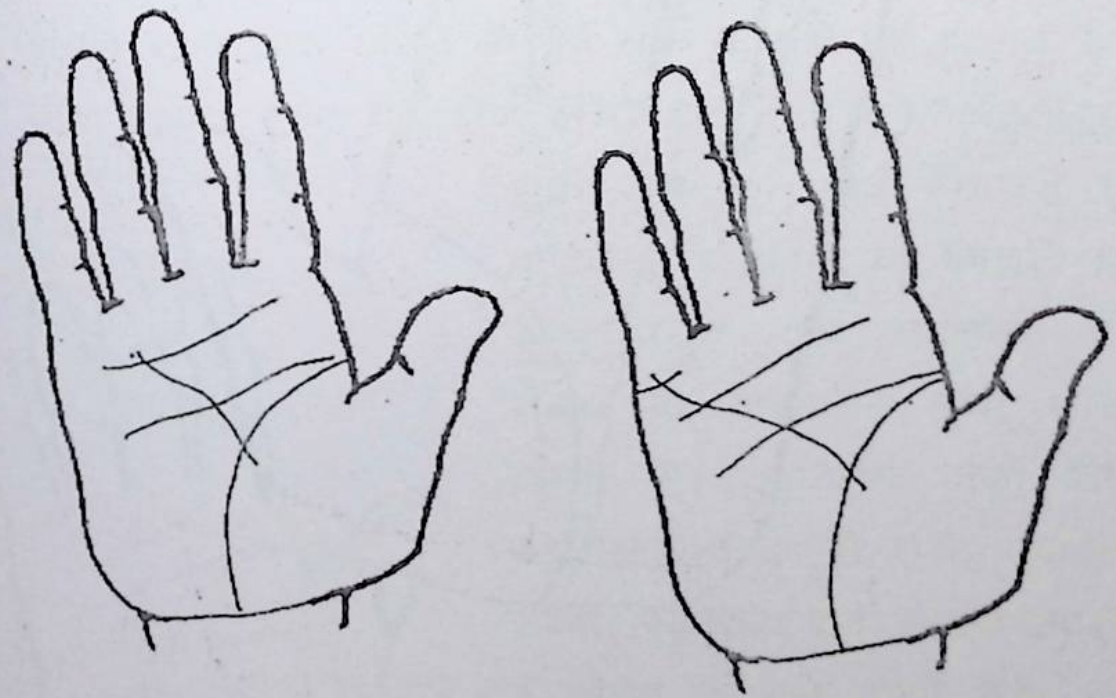

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. जीवन रेखा में सूर्य रेखा को काटती प्रभाव रेखा

जब प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई सूर्य रेखा पर पहुंच तथा उसे भी काटती हुई आगे बढ़ जाये तब जातक के पराक्रम में कमी तथा उच्च पद पर पहुंचने के बाद उसकी मान-प्रतिष्ठा में गिरावट तथा कलंक तक लग सकता है।

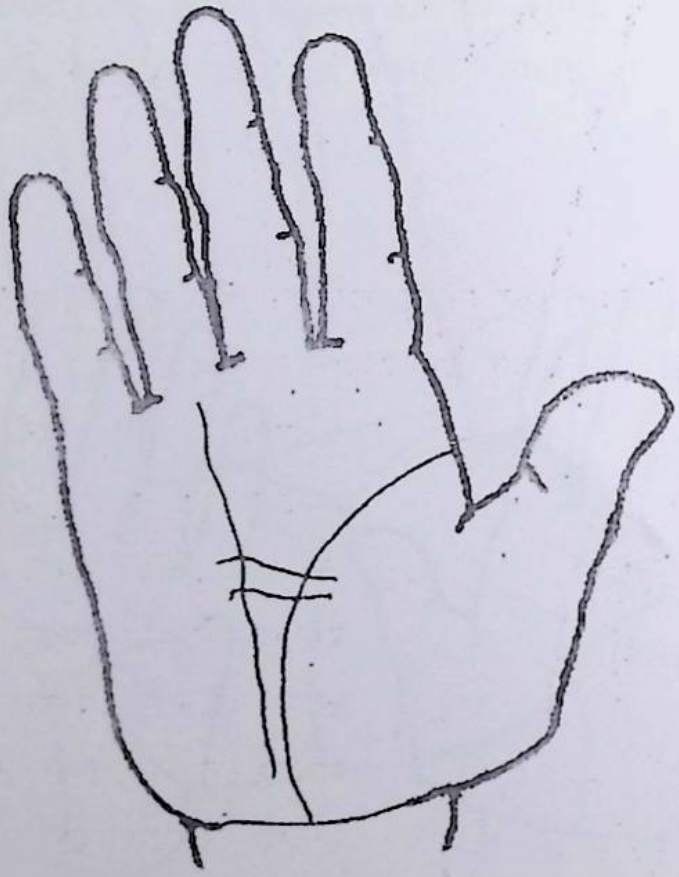

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. जीवन रेखा निम्न मंगल क्षेत्र को काटती हुई प्रभाव रेखा

जब जीवन रेखा और मंगल क्षेत्र को काटे तब दुर्घटना तथा अचानक स्वास्थ्य संबंधी समस्या उत्पन्न होती है।

7. जीवन रेखा तथा अंगूठे के पर्व तक काटती हुई प्रभाव रेखा

जब प्रभाव रेखा चंद्र क्षेत्र से जीवन रेखा को काटती हुई शुक्र क्षेत्र की उर्ध्व रेखाओं को काटते हुये अंगूठे के निचले पर्व तक पहुंचे तब जातक प्रेम संबंध में असफल तथा धोखा खाता है। आत्मिय जनों द्वारा वह छला जाता है तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्या एवं संतान उत्पत्ति में बाधा उत्पन्न होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. जीवन रेखा को मध्य में वलय कार प्रभाव रेखा काटती हुई

जब जीवन रेखा के मध्य भाग में अर्ध चंद्रकार वलय जिसकी शाखाएं उर्ध्व हो उम्र की गणना के हिसाब से मृत्यु कारक या भीषण दुर्घटना का संकेत है।

9. जीवन रेखा के प्रारंभ पर खड़ी रेखा

जब प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई गुरू पर्वत पर पहुंचे तब यह शुभ कारक है। जातक उच्च महत्वाकांक्षी तथा बचपन से कुशाग्र बुद्धि वाला, नैतिक तथा अच्छे चरित्र का स्वामी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. शनि क्षेत्र से जीवन रेखा तक पहुंच काटती हुई प्रभाव रेखा

शनि क्षेत्र से निकल, जीवन रेखा तक पहुंचकर काटती हुई रेखा जातक के जीवन में गंभीर दुर्घटना का संकेत है।

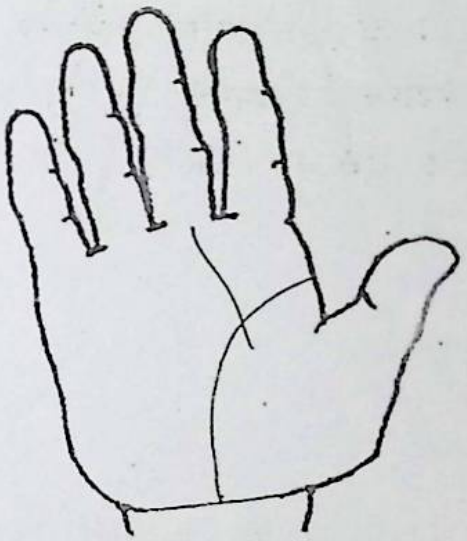

यह रेखा मस्तिष्क रेखा को काटती हुई हो तो मस्तिष्क में दुर्घटना से भारी चोट व ऑपरेशन की संभावना होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. निम्न मंगल से शनि क्षेत्र पर दो शाखा में विभक्त हो जीवन रेखा को काटती हुई प्रभाव रेखा

जब जीवन रेखा को काट शनि क्षेत्र पर पहुंच दो शाखाओं पर विभक्त हो जाये तब जातक का दांपत्य जीवन दुखभरा या पीड़ादायक होता है।

12. जीवन रेखा को काट भाग्य रेखा के समानान्तर प्रभाव रेखा

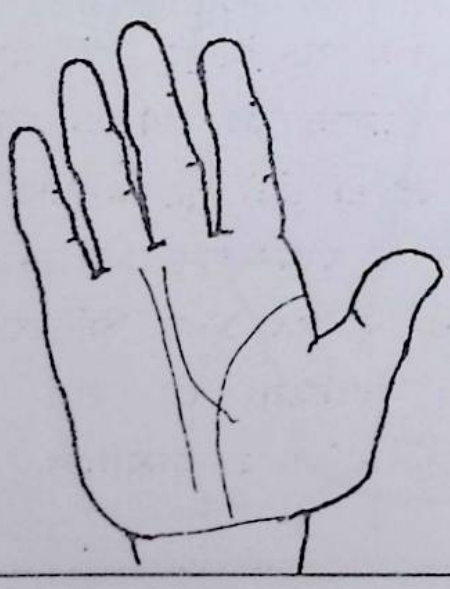

जीवन रेखा को काट कर उर्ध्व हो, भाग्य रेखा के समानान्तर रेखा जातक को सम्मान, उन्नति तथा पराक्रम में चार चांद लगाती है। जातक को जीवन में पारिवारिक जनों से सहयोग तथा धन लाभ प्राप्त होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

13. जीवन रेखा को काट सूर्य क्षेत्र में जाने वाली प्रभाव रेखा

प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काट कर यदि सूर्य पर्वत तक पहुंचे तो जातक को सफलताएं तथा उन्नति आसानी से मिल जाती है। उसे सभी भौतिक साधन तथा धन व वैभव की प्राप्ति भी होती है।

14. शुक्र क्षेत्र से निकल जीवन रेखा को काटती हुई बुध क्षेत्र तक पहुंचने वाली रेखा

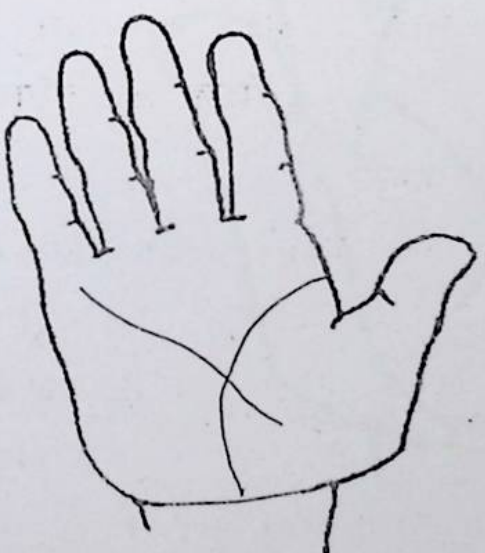

जब जीवन रेखा को काट बुध क्षेत्र तक प्रभाव रेखा पहुंचे तब जातक व्यवसायिक बुद्धि का स्वामी होते हुए व्यापार में सफलता प्राप्त कर धन अर्जित करता है। वह अच्छा चिकित्सक या वैज्ञानिक के रूप में उपलब्धियां प्राप्त करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

15. शुक्र क्षेत्र से निकल बुध क्षेत्र में विवाह रेखा तक पहुंच उसे काटती हुई रेखा

जब प्रभाव रेखा विवाह रेखा तक पहुंचकर उसे काटे तब ऐसे जातक का वैवाहिक जीवन खराब होता है। तलाक या संबंध विच्छेद की संभावना भी ऐसे जातक के साथ हो सकती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

16. चंद्र क्षेत्र से निकल शुक्र क्षेत्र में जीवन रेखा को काटती हुई प्रभाव रेखा

ऐसी प्रभाव रेखा जातक को विपरित लैंगिक आकर्षण के कारण हानि उन्पन्न करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY
306, Arihant Plaza, Udaipole, UDAIPUR-313001, RAJASTHAN, (INDIA)
Phone : 0294-2427211, Mobile : 98292-43211
E-mail : mcvaadmission@gmail.com
website : www.mcvudaipur.com

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh